हिन्दू मुसलिम एकता

पंडित सुन्दरलाल जी

के

चार लैक्चर, जो उन्होंने अक्तूबर सन् ४४ में सेण्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर गवरमेण्ट, लश्कर की दावत पर रियासत ग्वालियर में दिये.

प्रकाशक—
मंत्री, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
१८ बाई का बाग, एलाहाबाद

दूसरी बार १०००] [क़ीमत ।।।)

क्या कहाँ

पंजाब वग़ैरः की दर्दनाक ख़बरें मुल्क भर में फैल चुकी हैं। बहुत से दिलों में घबराहट और मायूसी है। इस छोटी सी किताब के पढ़ने से हिन्दू और मुसलमान दोनों को कुछ न कुछ शान्ति मिलेगी और सच्ची राह दिखाई देगी।

इलाहाबाद
१-१२-४७

—सुन्दरलाल

मुद्रक—पं० रामभरोस मालवीय, अभ्युदय प्रेस, प्रयाग

हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति

पबलिक मीटिंग कौन्सिलियेटरी बोर्ड लश्कर की तरफ़ से तारीख २१-१०-४४। मुकाम बाड़ा लश्कर। समय शाम के ६ बजे। सभापति—खानबहादुर सैयद अली हसन साहब, इंसपेक्टर जनरल आफ़ पुलिस।

पं० रामरूप तिवारीः—श्रीमान सभापति जी और दूसरे भाइयों, आज की कार्रवाई अब शुरू होने वाली है और श्रीमान पंडितजी आपके सामने भाषण देंगे। दो साल पहले भी पंडितजी के यहाँ पर दो तीन भाषण, आपके सामने हुए थे जिनकी आप लोगों ने बड़ी सराहना की थी। पर इस वक्त भी मैं थोड़े से शब्दों में पंडित जी के बारे में कुछ कहना उचित समझता हूँ। पंडित सुन्दरलाल जी भारतवर्ष के लोगों की सेवाएँ एक ज़माने से करते चले आ रहे हैं। आपने अपने जीवन में काफी त्याग किया है। इस समय आपका मुख्य उद्देश्य हिन्दू मुस्लिम सवाल को हल करना है। अगर आप उनके व्याख्यानों को शान्ति के साथ सुनेंगे और उनको अमल में लाने के लिए कटिबद्ध होंगे तो मैं समझता हूँ कि हिन्दू मुस्लिम समस्या हल होने में काफी मदद मिलेगी और आप लोगों के बीच की फ़िरक़ेबाज़ी दूर होगी।

अब मैं पंडित जी से प्रार्थना करूँगा कि वह आपके सामने अपना भाषण दें और आप उसे ध्यान से सुनें।

प्रेसीडेन्ट साहब :—देखिये साहब पंडित जी ने इतना बड़ा सफ़र रेल में बैठकर किया है जिस जमाने में कि सफ़र में बड़ी तकलीफ़ होती है। आपने इतनी बड़ी तकलीफ़ हमें नसीहत करने के वास्ते उठाई है। हम बड़े खुशकिस्मत हैं कि पंडितजी हमारे बीच में नसीहत देने आये हैं। आप ऐसे साहबों में से हैं जो दुनिया, खल्क़ की खिदमत करना चाहते हैं और हमेशा से उसकी फ़िक्र में लगे रहते हैं। ऐसे पंडित जी की नसीहत हमें ज़रा ग़ौर से सुनना चाहिये। अगर आप उसे ग़ौर से सुनेंगे तो आपको पंडित जी की स्पीच निहायत अच्छी लगेगी। चाहे आप किसी भी कौम या कुन्बे के हों जिस क़ौम के आदमी नसीहत सुनते हैं वह बड़ी क़ौम होती है। जिस ज़माने में मुसलमानों की बड़ी धूमधाम थी उस ज़माने में वह नसीहत सुनते थे और इसलिए वह बड़े थे। आज कल अंग्रेज़ लोग बड़े हैं क्योंकि वह नसीहत सुनते हैं। अंग्रेजों के यहाँ अखबारों से नसीहत का काम होता है। अंग्रेजों का एक अख़-बार 'पंच' निकलता है। वह हर एक किसी की नुक्ताचीनी करता है और नुक्ताचीनी के ज़रिये हर आदमी को सबक सिखाता है। आपको ताज्जुब होगा कि हर एक अंग्रेज के पास सफर में एक कापी पंच अख़बार की होती है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि जैसा कि पंडित जी कहते हैं आप उस पर अमल करेंगे तो आपकी क़ौम बड़ी होगी। अगर अमल नहीं करेंगे तो पीछे रह जायेंगे। अगर सुनने के बाद आपको कुछ पूछना हो तो लेक्चर के बाद आप उसे पूछ भी सकते हैं। पंडित जी बराबर आपको बतलायेंगे। अब आप ध्यान से सुनिये।

पंडित सुन्दरलाल जी—सदर साहब! बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ों! आज क़रीब तीन साल के बाद मुझे फिर से

आप के शहर में आने का मौका मिला । मैं आपका इसलिए मश्कूर हूँ कि आपने मुझे इस चीज़ का मौका दिया है कि मैं अपने नाचीज़ ख्यालात आपके सामने पेश करूँ । आगे बढ़ने से पहले मेरा फ़र्ज़ है कि मैं अपने भाइयों से इस बात के लिये माफ़ी माँगूँ कि मैं बजाय खड़े होने के बैठकर अपने ख्यालात का इज़हार कर रहा हूँ । मैं मजबूर हूँ मेरी तन्दुरुस्ती इस काबिल नहीं कि मैं खड़ा होकर ज्यादा देर तक बोल सकूँ । मुझे उम्मीद है कि इस छोटी सी गुस्ताखी के लिए आप मुझे माफ़ करेंगे । अब रहा मेरा मज़मून । जिस मज़मून पर मुझे यहाँ के लिए बुलाया गया है और जिस पर मैं पहले भी आप के सामने अपने विचार प्रगट कर चुका हूँ वह हिन्दू मुसलिम एकता है ।

इस हिन्दू मुसलिम एकता के बहुत से पहलू हैं । इसके कई रुख हैं । इस सवाल को हम कई तरफ से देख सकते हैं । जिस तरह से मैं आज आपके सामने अपने ख्यालात का इज़हार करना चाहता हूँ वह भी इसका एक खास पहलू है । आज मैं हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की निगाह से अपने विचार प्रगट करूँगा ।

सन् १९४२ में मेरे जेल जाने से पहले मुझे भाई परमानन्द जी के साथ बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । मैं आपको बता दूँ कि भाई परमानन्द जी से मेरा परिचय कम से कम चालीस पैंतालीस साल से है और वह परिचय भी मामूली नहीं है । गहरा परिचय है । हम महीनों और वर्षों साथ रह चुके हैं, हम में प्रेम है, मैं जब पिछली बार लाहौर में भाई जी से मिला और उनसे यह इच्छा प्रकट की कि हम देश के इस नाजुक सवाल के ऊपर कुछ विचार करें, भाई जी ने जो मुझसे पहला सवाल किया वह यह था कि अगर आप हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को खोकर इस मुल्क को आज़ाद करना चाहते हैं

और उसके लिए हिन्दू मुस्लिम एकता की ज़रूरत है तो मुझे ऐसी आज़ादी की ज़रूरत नहीं है। हमारे और आपके बीच कोई कामन ग्राउण्ड नहीं। लेकिन अगर आपकी यह राय नहीं है तो हम दोनों बातचीत कर सकते हैं। इसका जो जवाब मेरा उस दिन था वही आज है। हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति, जिस तरह मैं उसे समझता हूँ और जिस तरह समझने की मैंने अपनी जिन्दगी भर कोशिश की है, मेरी समझ में यही आता है कि हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की दृष्टि से ईश्वर, गॉड और अल्लाह एक हैं। मैं यह दावे के साथ कहने के लिए तैयार हूँ कि हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को त्याग कर एक मिनट के लिए भी आज़ादी खरीदने के लिए तैयार नहीं हूँ। हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए भी मेरे दिल में कम तड़प नहीं है। लेकिन इस क़ीमत पर मैं उसे लेने को तैयार नहीं। इस थोड़ी सी भूमिका के बाद मैं यह बताने की कोशिश करूँगा कि वह हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति क्या चीज है जिसकी हम दुहाई देते हैं। हम हिन्दू धर्म और संस्कृति की दुहाई देते हैं और आपस में मिल नहीं पाते। मुझे एक मकूला याद आ रहा है, "धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः" अर्थात् धर्म की तुम रक्षा करो वह तुम्हारी रक्षा करेगा, अगर धर्म को तुम खत्म कर दोगे तो वह तुम्हें खत्म कर देगा। अगर हिन्दू धर्म के सच्चे भाव हम लोगों के अंदर होते और हम उस धर्म के पालन करने वाले होते तो आज इस मुल्क की यह हालत न होती। हम धर्म की रक्षा नहीं कर रहे हैं। हमने धर्म को खत्म कर दिया है। इस छोटे से मैदान के अन्दर जो लोग मेरी बात सुन रहे हैं मैं उनको याद दिलाना चाहता हूँ कि इस वक्त क्या हालत है! हमारे देश के मुख्तलिफ हिस्सों में जाकर अगर आप देखें तो आपको सैकड़ों बच्चे सड़कों पर पड़े हुए मिलेंगे जिनके मुँह में कोई अन्न का दाना डालने

वाला नहीं है, इस समय जगह जगह इन्फ्लूएन्जा, कालरा, और पेचिश से सैकड़ों लोग प्राण दे रहे हैं, अगर हमने सच-मुच अपना चलन ठीक रखा होता, अपने धर्म का पालन किया होता तो हमारी यह हालत नहीं हो सकती थी। जो लोग यहाँ पढ़े लिखे मौजूद हैं वह एक मिनट के लिए सोचें कि हिन्दू धर्म और हिंदू संस्कृति क्या चीज़ है जिसकी रक्षा की कोशिश करते हुए भी हमारी यह दुर्दशा है। सचमुच हम हिन्दू संस्कृति और हिंदू धर्म से पीछे हट गए हैं। मैं खासकर अपने पढ़े लिखे भाइयों से बातचीत करना चाहता हूँ। हिंदू धर्म की आदि पुस्तक ऋग्वेद के जमाने से लेकर महाभारत और गीता के जमाने तक मैं आपको ले जाना चाहता हूँ। आप शान्ति के साथ एक मरतबा हिन्दू धर्म की तरफ़ निगाह डालने की कोशिश करें और यह देखें कि हिंदू संस्कृति हमें क्या सिखाती है।

मुझे दावा है कि अगर हमने हिंदू धर्म को ठीक ठीक समझा होता, हिन्दू धर्म का पालन किया होता तो यह मुल्क एक सेकेन्ड के लिए भी ग़ैरों का गुलाम नहीं हो सकता था। अगर हमने हिन्दू धर्म का पालन किया होता तो हिन्दू और मुसलमानों के अंदर यह वैमनस्य न दिखाई पड़ता। धर्म तो एक दूसरे की सेवा की चीज है। धर्म फाड़ने वाली चीज़ नहीं है, वह एक दूसरे को मिलाती है। ऋग्वेद हिंदुओं की सब से पुरानी किताब है। ऋग्वेद का जब समय था तो उस आदिकाल में आप देखेंगे कि हिंदू जाति का यह नाम भी न था। 'हिंदू' नाम को शुरू हुए अभी तीन हजार वर्ष भी नहीं हुए। इस जाति का नाम उस समय 'आर्य' था। आर्य लोग उन दिनों इंद्र, वरुण, मित्र, सूर्य आदि देवताओं के उपासक थे। उसके बाद जब यह धर्म और आगे बढ़ा, उसने उन्नति की, वह अपने विकास को प्राप्त हुआ तो उसने इन अनेकों में एक ही परमात्मा को देखने की कोशिश

की। मैं अपने को 'मवहिहद' यानी एक ईश्वर का उपासक, गिनता हूँ, पर एक ईश्वर को मानते हुए भी उसके अलग अलग अंगों, अलग अलग गुणों या पहलुओं की अलग अलग रूपों में उपासना को मैं गलत नहीं कह सकता। कोई भी इनसान उस परम पिता परमात्मा को उसके असली रूप में नहीं देख सकता। यह एक मोटी सी चीज है कि जब कभी कोई मनुष्य ईश्वर की कल्पना करने की कोशिश करता है, उस परवरदिगार का ध्यान अपने मन में लाने की कोशिश करता है, तो वह उसके किसी न किसी खास पहलू या गुण की ही कल्पना कर सकता है। शुरू के अनेक देवताओं की पूजा का यही असली रूप था और यही उसका मतलब था।

मैं एक छोटा सा क़िस्सा इस बारे में बयान करूँगा, आप में से कुछ ने मौलाना रूम का नाम सुना होगा। वह एक मशहूर फ़क़ीर और सूफी संत थे। उनकी मसनवी में एक क़िस्सा आता है कि हज़रत मूसा एक पहाड़ पर चले जा रहे थे। उन्होंने देखा कि उस पहाड़ के ढाल पर एक गढरिया पड़ा हुआ कुछ बक रहा है। मूसा पीछे से जाकर उसकी बात सुनने लगे कि वह क्या बक रहा है। गडरिया लेटा हुआ था। उसकी भेड़ें नीचे खड्ड में चर रही थीं। उसका डण्डा दाहिनी तरफ पड़ा था। कम्बल एक तरफ रखा था और गडरिया कुछ बक रहा था। ईरानी ज़बान में .खुदा को यज़दान कहते हैं। गडरिया कह रहा था—"ऐ यज़दान! अगर तू मुझे कहीं मिल जाय तो तेरे पाँव थक गये होंगे, मैं अपने हाथों से तेरी मुट्ठी चप्पी कर दूँगा। तेरी चप्पल फट गई होगी मैं अपने हाथों से तेरी चप्पल सी दूँगा। ऐ यज़दान! तू भूखा होगा, मैं जंगल से लाकर तुझे ताज़ा शहद का प्याला पिलाऊँगा। ऐ यज़दान! तू कहाँ है? तू मुझे क्यों नहीं मिलता? अगर तू मुझे मिल जाय तो मैं तेरे

बिछौने को अच्छी तरह बिछा दूँगा, एक भी सलवट नहीं रहने दूँगा। अगर तू मुझे मिल जाय तो तेरे कम्बल में जुएँ पड़ गये होंगे, उन्हें मैं एक एक करके बीन दूँगा, ऐ यज़दान! अगर तू कहीं मिल जाय तो तेरे बिस्तर पर मैं रात को फूल बिछा दूँगा, तुझे मीठी मीठी नींद आयेगी। ऐ यज़दान ! तू मुझे क्यों नहीं मिलता ?" गडरिया इस तरह बक रहा था । उसकी आँखों से लगातार आँसू टपक रहे थे। हजरत मूसा ने जब यह गुफ़्तगू सुनी तो उन्हें गुस्सा आया। उन्होंने सामने आकर उस गड़रिये को देखा। दोनों की निगाहें चार हुईं। हजरत मूसा ने कहा, "ऐ चौपान ! तू क्या कह रहा है, तू किससे बातें कर रहा है।" गडरिये ने कहा—"मैं यह कह रहा हूँ" उसने फिर वही बातें दुहरा दीं और कहा कि—"मैं यज़दान से बातें कर रहा था" मूसा बोले- "तू यज़दान की शान में यह सब कुफ्र बक रहा था। तूने जो कुछ कुफ्र बका है उसकी अगर आग बन जावे तो तू तो उस आग में जल ही जायगा लेकिन दोनों जहान भी उसमें जल जायेंगे" गडरिये ने घबरा कर पूछा—"मूसा ! मुझसे इतना बड़ा कुसूर हो गया है ? मूसा ! मेरे गुनाह का कोई हल, कोई कुफ्फारा या प्रायश्चित नहीं है ?" मूसा ने जवाब दिया—"नहीं ! तू उस उस अल्लाह की शान में कह रहा था कि जुएँ पड़ गए होंगे, चप्पल फट गई होंगी । क्या अल्लाह के जुएँ पड़ सकते हैं ? क्या उसे तेरे शहद की जरूरत है ?तूने बहुत बड़ा गुनाह किया है। तूने उस वहदहूलाशरीक की शान में इतनी गन्दी बातें कही हैं। इसका कोई प्रायश्चित नहीं।" गडरिया बोला, "मूसा ! फिर सोच ले। क्या मेरे गुनाह का कोई प्रायश्चित नहीं है ?" जब उसे मूसा से कोई जवाब तसल्ली देने वाला नहीं मिला तो उसने अपनी लाठी हाथ में ली, कम्बल कंधे पर डाला, और अपनी भेड़ों को वहीं छोड़ चल दिया। मूसा

खड़े देख रहे थे। चौपान सामने की पहाड़ी पर ऊपर को चढ़ा। जब वह पहाड़ी की दूसरी तरफ़ जाकर मूसा की निगाह से गुम हो गया तो मूसा लौटे। उसी समय आकाशवाणी हुई। अल्लाह ने मूसा के दिल में आवाज़ दी। मूसा को इलहाम हुआ। अल्लाह ने मूसा से कहा—"मूसा तूने क्या किया?" मूसा ने पूछा—"या अल्लाह! क्या मैंने कोई कुसूर किया?" अल्लाह ने जवाब दिया "मूसा! क्या तुझे यह मालूम नहीं कि हमारी असलियत तेरी दिमाग़ी कल्पना से भी उतनी ही दूर है जितनी उस मोटी अक्ल वाले की मोटी कल्पना से। मूसा! हम तक पहुँचने का रास्ता दिमाग़ नहीं है। हम तक पहुँचने का रास्ता दिल है, और वह गडरिया उस दिल के दरवाज़े पर बैठा हुआ था, तू अभी उससे दूर है। तुझे उससे सबक लेना चाहिये था, तूने उलटा उसे उपदेश देना चाहा।" अल्लाह ने मूसा से कहा—

"मज़हबे इश्क़ अज़ हुमा मिल्लत जुदास्त।
आशिक़ाँरा मज़हबो मिल्लत ख़ुदास्त॥
मूसिया! आदाब दानाँ दीगरन्द।
आशिक़ाँ सोज़े दरूँनाँ दीगरन्द॥
तू बराए वस्ल करदन आमदी।
नै बराए फ़स्ल करदन आमदी॥"

यानी—"मूसा! इश्क़ का मज़हब सब मज़हबों से अलग है, वहाँ ख़ुदा ही मज़हब और ख़ुदा ही मिल्लत है। ऊपर के कर्म-काण्ड दूसरी चीज़ हैं। जिनके दिल में आग लगी है वह प्रेमी दूसरे होते हैं और ज़ाहरी कर्मकाण्ड जानने वाले दूसरे हुआ करते हैं। इश्क का मज़हब, प्रेम का मज़हब अल्लाह की चीज़ है। हमने तुझे मिलाने के लिये भेजा था, अलहदा करने के लिये

नहीं भेजा था। तूने हमारे भक्त को हक से अलहदा कर दिया... इत्यादि" मूसा ने पूछा—"अल्लाह ! अब मैं क्या करूँ ?" अल्लाह ने कहा—"मूसा ! उसी चौपान के पास जा और उससे कह कि उसके लिए सब माफ़।" मूसा को तीन वर्ष उस चौपान को ढूँढने में लग गये। आख़िर वह एक पहाड़ पर मिला। मूसा उसके पास पहुँचे। गडरिये की आँखें आसमान की तरफ लगी हुई थीं। वह अकेला जंगल में खड़ा था। गड़रिये ने पूछा—"मूसा ! अब कैसे आये", मूसा ने जवाब दिया—"मैं तुझे यह खुशखबरी सुनाने आया हूँ कि अल्लाह कहता है कि तू ठीक था और मैं ग़लत था। तेरे लिए सब माफ़ है।" चौपान ने जवाब दिया, "मूसा ! तुम किस से बात कर रहे हो। उस वक्त से अब तक मैं सैकड़ों वर्ष का रास्ता तै कर चुका हूँ। मैंने उस पुराने गडरिये के दिल को पीस कर उसके खून में स्नान कर रखा है। मेरी खुदी अब मिट चुकी।"

यह कहानी मैंने आपके सामने इसलिये रखी कि हम ईश्वर को अलहदा अलहदा कई तौर से मानते और पूजते हैं। उसकी अंश पूजा या अलग अलग देवताओं के रूप में पूजा को मैं ज़रूरी तौर पर तौहीद यानी एकेश्वरवाद के खिलाफ़ नहीं समझता।

अब हम ज़रा आगे बढ़ें। थोड़े दिनों बाद जब आर्य धर्म का और अधिक विकास हुआ तो उपनिषदों का समय आया। मैं कह सकता हूँ कि तौहीद यानी एकेश्वरवाद पर उपनिषदों से बढ़ कर दुनिया में और कोई किताब नहीं लिखी गई। यह वह जवाहरात हैं जो अल्लाह ने हमारी ज़िन्दगी को रोशन करने के लिये हमें दिये हैं। इनमें सब से पहला ईशोपनिषद है, जिसमें लिखा है—

"ईशावास्यमिदं सर्वंयत् किंचित् जगत्याम् जगत,
तेनत्यक्तेन भुंजीथ मागृधा कस्य स्विद्धनं"

अर्थात इस दुनिया में जितनी चीजें हैं सब बदलती रहती हैं। एक परमेश्वर इस सब के अन्दर रमा हुआ है और सब को ढके हुए हैं। हम जो कुछ करें या भोगें उसी परमेश्वर को अर्पण करके, 'फ़ी सबी लिल्लाह' करना चाहिये। किसी चीज़ का भी लोभ नहीं करना चाहिये। संसार की धन सम्पत्ति किसी के पास भी टिकने वाली नहीं है। उपनिषदों की बार बार आज्ञा है कि—जो आदमी सब प्राणियों को अपने अन्दर देखता है और अपनी ही तरह समझता है और सब के अंदर अपनी आत्मा को देखता है, वह संसार में कभी धोखा नहीं खा सकता। उपनिषद् किसी भी संप्रदाय विशेष का या किसी भी रूढ़ी विशेष पूजा विधि या किसी खास रस्म रिवाज के पालन का हमें उपदेश नहीं देते। उपनिषदों की तालीम का निचोड़ यह है कि ईश्वर एक है। वह आदमी के खयाल से भी परे है। वह अचिन्त्य और अनिर्वचनीय है। वह निराकार है। केवल एक उसी की पूजा करनी चाहिये। सब प्राणियों के अंदर और सब तरीक़ों के अंदर एक ही आत्मा को देखना चाहिये। सब को अपनी तरह समझना चाहिये और सदा सबके भले में लगे रहना चाहिये। यह बात उपनिषदों में बार बार कही गई है और यही उपनिषदों की शिक्षा का सार ह। सचमुच यह तालीम हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की चोटी की सुन्दर और शानदार चीज़ थी। इस धर्म को मानने वालों और इस पर अमल करने वालों का दुनिया के किसी दूसरे धर्म के पालन करने वालों से कभी झगड़ा नहीं हो सकता। उपनिषदों के अनुसार आत्मा एक है, जीवन एक अखण्ड समुद्र है। उपनिषदों ने हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को, बल्कि कहना चाहिये आर्य धर्म और आर्य संस्कृति को मानव धर्म और मानव संस्कृति यानी सारी दुनिया का धर्म और दुनिया की संस्कृति बना कर खड़ा कर दिया।

इसके बहुत दिन बाद वह समय आया जिसे हम मोटे तौर पर पुराणों और महाभारत का समय कह सकते हैं।

पुराण लिखे गये। शाक्त, शैव, और वैष्णव, अलग इष्ट-देवों के अलग-अलग उपासक पैदा हो गये। अलग अलग सम्प्रदायों में तरह तरह के तिलक लगाये जाने लगे। कोई १११ नंबर का, कोई इस तरह और कोई उस तरह। जनेऊ कोई तीन धागे का, कोई छै का तो कोई नौ धागों का। तरह तरह के देवी देवताओं की पूजा शुरू हो गई। यह पौराणिक समय था। उसी समय महाभारत का युद्ध हुआ। महाभारत ग्रन्थ का ही एक हिस्सा भगवत गीता है। उपनिषद हिन्दुओं में से किसी ने पढ़े हों या न पढ़े हों, मैं समझता हूँ काफी भाई ऐसे होंगे जिन्होंने भगवत गीता जरूर पढ़ी होगी। मैं चंद मिनट के लिये प्रार्थना करूँगा कि वह मेरे साथ साथ भगवत गीता की तालीम पर विचार करें। हमारी यह बदक़िस्मती है कि आज गीता जैसी पुस्तक के होते हुए भी हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति असली रूप में हमारे दिलों के अन्दर नहीं समाने पाती। मुझे आज हिन्दू और मुसलमान, ईसाई और पारसी सब के अन्दर एक ही आत्मा दिखाई दे रही है। मैंने यह भगवत गीता ही से सीखा है। अगर हिन्दुओं ने भगवत गीता ध्यान से पढ़ी होती और उस पर अमल किया होता तो आज इस देश की यह दुर्गति न होती। थोड़ी देर के लिये पहले अध्याय से लेकर १८वें अध्याय तक सरसरी तौर पर गीता को दुहरा जाइये। गीता से पता चलता है कि उस समय देश के अन्दर तरह तरह के धर्म और तरह तरह के सम्प्रदाय या रस्म रिवाज चल रहे थे। अर्जुन ने युद्ध में हिस्सा लेने के खिलाफ़ जो सब से पहली और सब से बड़ी दलील पेश की थी वह यह थी कि "अगर मैं युद्ध में हिस्सा लूँगा तो हमारे

कुल धर्म और जाति धर्म (जाति धर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः) सब नष्ट हो जायेंगे। और केवल कुल धर्म और जाति धर्म ही नष्ट नहीं होंगे बल्कि हमारे सब मरे हुए पितर भी वर्णसंकर हो जाने की वजह से नरक को जायेंगे। मुल्क के अंदर उस समय अलहदा अलहदा जातियाँ थीं। जातियों से मतलब वर्ण का नहीं है। इन जातियों को महाभारत में ज्ञातियाँ भी कहा गया हैं। जातियाँ अलग थीं, वर्ण और कुल अलग थे। इन सब के अलहदा अलहदा धर्म यानी रस्म रिवाज थे। इन रस्म रिवाजों के अन्दर "लुप्तपिन्डोदक क्रियाः" पिण्डदान भी शामिल था। अर्जुन ने एतराज़ किया कि अगर मैं इस लड़ाई में हिस्सा लूँगा तो बुजुर्गों के जो तरीक़े और रिवाज चले आ रहे हैं वह सब मिट जायेंगे। हमारे अन्दर वर्णसंकर हो जायगा और हम सब नरक में चले जायेंगे। इसके जवाब में गीता में भगवान कृष्ण ने साफ़ कहा कि "अशोच्यानवशोचस्त्वं, प्रज्ञावादांश्च, भाषते..." अर्थात्, हे अर्जुन! तू क्या पागल की सी बातें कर रहा है। तू पंडित बनता है और पागलों की सी बातें करता है। यह बेकार चीजें, यह रिवाज वह रिवाज, सोचने के क़ाबिल भी नहीं है। पंडित यानी समझदार आदमी का काम इनके रहने या मिट जाने की फ़िक्र करना नहीं है। गीता से मालूम होता है कि उस समय अलहदा अलहदा देवी देवताओं की पूजा भी होती थी, और ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र जन्म से माने जाते थे। यज्ञों में देवताओं के नाम ले ले कर आहुतियाँ दी जाती थीं। पत्र पुष्प चढ़ाये जाते थे। जो इस वक्त हिन्दू धर्म का रूप है वह उस समय शुरू हो चुका था। आश्रम धर्म के भी नियम थे। अर्थात् सन्यासी अमुक काम न करे या अमुक काम करे। यह सारी चीजें भी उस समय थीं। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की कि मुझे इस

गोरखधंधे के अन्दर रास्ता दिखाई नहीं देता, आप मुझे रास्ता दिखाइये। श्रीकृष्ण ने जो रास्ता दिखाया वही गीता का उपदेश है। गीता मनुष्य को सब रूढ़ियों और रीति रिवाजों से ऊपर उठने का उपदेश देती है। Gita is a standing protest against all forms. दुनिया की कोई किताब आदमी को कर्म कांडों के जाल से इतना नहीं बचाती जितना गीता बचाती है। गीता वरण भेद को भी गुण कर्म और स्वभाव के अनुसार मानती है—"चातुर्वण्यम् मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः"——गीता के मुताबिक़ अगर पंडित जवाहरलाल ब्राह्मण हैं तो महात्मा गाँधी और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद भी ब्राह्मण हैं। गीता जन्म से जाति का खण्डन करती है। वह हमें सारे अलग अलग धर्मों से ऊपर उठा कर यह सीधा धर्म बतलाती है कि एक ईश्वर को मानो। अपनी इन्द्रियों को वश में करो और सबसे बढ़कर यह कि अपने अन्दर एक ईश्वर को देखने की कोशिश करो। "अपने अन्दर ईश्वर को, ईश्वर के अन्दर सब को, अपने अन्दर सबको, और सबके अन्दर अपने को जो देखता है वही ठीक देखता है।" गीता का सार भगवान कृष्ण ने १८वें अध्याय के एक श्लोक में कहा है। वह कहते है, "सर्वधर्मान्परित्ज्य मामेकं शरणं व्रज।" मैं हिन्दुओं से प्रार्थना करूँगा कि वह इन शब्दों पर ध्यान दें। भगवान कहते हैं कि 'सब धर्मों को छोड़ कर केवल एक मेरी शरण आ।' अब आप पहले अध्याय से इसे मिला लीजिये जहाँ अर्जुन ने कुल धर्मों और जाति धर्मों का जिक्र किया है। इस अध्याय में भगवान कृष्ण कहते हैं कि इन सब धर्मों को छोड़ कर एक मेरी शरण आ। ईमान्दारी की बात यह है कि जिस धर्म को हम आज अपना धर्म कह कर पुकार रहे हैं वह धर्म नहीं संकीर्णता है। जो जाति धर्म और कुल धर्म अर्जुन के मार्ग

में सब से बड़े पत्थर थे वास्तव में वही रूढ़ियाँ, कर्मकाण्ड और रस्म रिवाज हैं जो हिन्दू और मुसलमानों को अलग किये हुए हैं और जिनकी वजह से यह दोनों अलग अलग नामों से पुकारे जाते हैं। बहुत से धनी हिन्दुओं ने गीता को लाखों की तादाद में बाँटा। बहुतों ने गीता को पढ़ा, मंदिरों के अन्दर गीता के पाठ होते हैं। गीता की दृष्टि से यह हमारी आजकल की जन्म से जाति पाँति ब्राह्मण क्षत्री, वैश्य और शूद्र, लाला, पंडित, ठाकुर इत्यादि और हमारी छुआ छूत सब गलत है। यह चीज़ किताबों में ही रखने को नहीं है, यह अमल करने की चीज है। भगवत गीता हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की चोटी का फूल है। गीता कहती है—'विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि, शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः अर्थात्—पंडित वह है जो समदर्शी है, यानी जो विद्या और विनय से सम्पन्न ब्राह्मण, गाय हाथी, कुत्ते और चाण्डाल सब को एक निगाह से देखता है। हिन्दुओं! जरा अपने आजकल के धर्म को इस कसौटी पर कस कर देखो कि जिस चीज़ को तुम धर्म और हिन्दू संस्कृति कह कर पुकार रहे हो वह इस कसौटी पर पूरी उतरती है या नहीं। ईश्वर किसी के साथ अन्याय नहीं करता। उस परिवरदिगार के दरबार में दूसरी क़ौमों के गुनाहों पर तुम्हें दण्ड नहीं दिया जा सकता। दूसरों के कुसूर के लिये तुम्हें सजा नहीं मिल सकती। अगर आज हमारी हालत गिरी हुई है, हमारे मुल्क की हालत अबतर है, तो कहीं न कहीं कुसूर हमारा ही है हम अपने धर्म के आदर्श से गिर चुके हैं। हमने धर्म के नाम पर पाप किये हैं। हमें उसकी सजा भुगतनी पड़ेगी। सच यह है कि इस झूठी जाति पाँति को लेकर, और इस छुआ छूत को लेकर ब्राह्मण और चमार के भेद को लेकर हमने अन्याय किया है, हमने दूसरों का दिल

दुखाया है। अपने इसी पाप में चिपटे रह कर क्या हम दुनिया में इज्ज़त से जिन्दा रहने की उम्मीद कर सकते हैं। "ईं खयालास्तो महालस्ता जनूँ" हमारा यह खयाल ही पागलपन है। हमने छोटी कहलाने वाली जातियों के साथ अन्याय और पाप किया। हम गीता के पाठ को भूल गये। उपनिषदों की तालीम को भूल गये। हम रामलखन तिवारी और घसीटा चौधरी में, रामप्रसाद और खुदाबख्श में एक राम देखने लगे। इसी का नतीजा है जो हम आज भुगत रहे हैं। एक मिनट के लिए हम मुसलमानों की बात तो छोड़ दें, हम दस करोड़ अछूत कहलाने वाले इन्सान के बच्चों को अपने से छोटा और गिरा हुआ मानते हैं। सदियों से हमने जो बरताव उनके साथ किया है उसकी सजा हमें कम मिली है। हम ३० करोड़ हिन्दुओं के अन्दर भी एक राम को नहीं देख सके। हम गीता की तालीम से कोसों दूर हैं। गीता के अनुसार हम सब ने अपनी जिन्दगी बसर की होती तो आज इस देश की यह हालत न होती। अगर आप निगाह डालें तो आपको मालूम होगा कि सरकारी रिपोर्टों के मुताबिक ही आज २० करोड़ से ऊपर मनुष्य इस देश में ऐसे हैं जिन्हें २४ घण्टे में एक बार पेट भर अन्न नहीं मिलता। मैंने हजारों ऐसी औरतें गोंडवाने में देखी हैं जो दिन भर एक बालिश्त भर की चिन्धी लपेटे अपनी शर्म को ढके रहती हैं, शाम को अपनी झोंपड़ी के अन्दर घुस कर वह उस छोटी सी चिन्धी को भी अपने बच्चों को सर्दी से बचाने के लिए उन पर डाल देती हैं।

यूरोप के देशों की ओर निगाह डालिए तो दिखाई देगा कि छोटी क़ौमें आज दुनिया के तख्ते को पलट रही हैं, दूसरों की क़िस्मत का फैसला कर रही हैं, और हम चलीस करोड़ इनसान के बच्चे महज इस बात के मुन्तजिर हैं कि हमारे सर के ऊपर

अंग्रेज रहेंगे या जापानी, जरमन रहेंगे या रूसी ! इस दिल के अन्दर एक दर्द है ! मुझे मालूम है कि एक दिन यह मुल्क महान रह चुका है। इस देश के रहने वाले किसी दिन दुनिया में चमक चुके हैं। मैं फिर उस दिन को वापस लाना चाहता हूँ। मैं इस मुल्क को फिर से आजाद और खुशहाल देखना चाहता हूँ, फिर से महान देखना चाहता हूँ। इस अधमरी कौम को फिर जिन्दा देखना चाहता हूँ, मेरे दिल में हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की बड़ी इज्ज़त है। मैं उस हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की बात कह रहा हूँ जो उस संस्कृति का चोटी का फूल है, जो सारी दुनिया को खुशबू पहुँचा सकता है। दूसरों का लड़ाने के लिए, या मुसलमानों और दूसरे ग़ैर हिन्दुओं के लड़ने के लिए, चमारों, मेहतरों आदि को अपने से छोटा समझने के लिए जिस हिन्दू धर्म की दुहाई दी जाती है वह उस दरख्त के तने को सूखी हुई छाल है। हिन्दू धर्म के नाम पर आज हम उस विशाल दरख्त के चारों तरफ की छाल को चाट रहे हैं। इस गंदी हरकत से हम न केवल अपनी जबान ही को लोहू लोहान कर रहे हैं बल्कि हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को भी दुनिया की नजरों में मजाक की चीज बना रहे हैं, और अपने इस प्यारे देश की किस्मत को खराब करते जा रहे हैं। कबीर और दादू ऐसे सन्तों ने इसे खूब समझ लिया। उन्होंने हिन्दू धर्म ही नहीं, सब धर्मों के अन्दर, प्राणी मात्र के अन्दर, एक ईश्वर को देखा था। गीता की असली तालीम को उन्होंने पूरी तरह समझा और अपनाया था, कि हम सब प्राणी मात्र के अन्दर एक ईश्वर को और एक ईश्वर के अंदर प्राणी मात्र को देखें, यही शिक्षा उपनिषदों की की है, हिन्दू संस्कृति इसी चीज़ का नाम है।

कहा जाता है कि महात्मा बुद्ध ने ईश्वर की हस्ती तक से इनकार किया, उन्हें विष्णु के १० अवतारों में गिन लिया गया,

यह हिन्दू धर्म की महानता, उसकी विशालता थी। हजरत मुहम्मद और हजरत ईसा को भी हम विष्णु अवतारों में क्यों न गिन लें। अवतार अधिकतर अंश-अवतार ही होते हैं। विष्णु सहस्र नाम में विष्णु के एक हजार नाम लिखे हुए हैं। इसका यह मतलब नहीं कि जो नाम वहाँ लिखे हैं वही विष्णु के नाम हो सकते हैं। इसका यही मतलब है कि विष्णु के अनन्त नाम हैं। सब नाम उसी के नाम हैं। वह ईश्वर सब का ईश्वर है। उसके अनन्त अवतार हैं। सब मजहबों के पैग़म्बरों और ऋषियों के अंदर जो आत्मा काम कर रही थी वह एक ही परमात्मा को देखती थी। सच्चे हिंदू धर्म की निगाह में जन्म से जातियाँ जायज़ नहीं हो सकतीं। सच्चा हिंदू धर्म दुनिया के सब लोगों का धर्म है। वह छुआछूत का धर्म नहीं है। ब्राह्मण अब्राह्मण का धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म वह व्यापक धर्म है जो उपनिषदों के अन्दर बन्द है, जो गीता के अन्दर चिल्ला रहा है। यह सब छुआछूत और जात पात मिटेंगी, सवाल सिर्फ़ यह है कि कब और किस तरह?

मुझे इस समय एक मिसाल याद आ रही है। बंदरिया अकसर अपने मरे हुए बच्चे को छाती से चिपटाए रखती है। अगर बच्चा गिर जाय तो ठीक, लेकिन अगर वह उसे चिपटा ही रहे तो बंदरिया के जिस्म में एक दिन सड़न पैदा हो जाती है और बन्दरिया उसी से मर जाती है। अब अगर हमने इस सदियों के कचरे को न फेंका तो दुनिया हमारा इन्तज़ार नहीं करेगी। आज दुनिया का तख्ता पलट रहा है। आप इस झूठे ख्याल में न रहें कि आप सड़ी गली रूढ़ियों, जाति पाति और छूत के इस कचरे को छाती पर रख कर अपने आपको जिन्दा रख सकेंगे। अगर आपको जिन्दा रहना है तो इस कचरे को फेकना ही पड़ेगा। ब्राह्मण और चमार के भेद को मिटाना ही

पड़ेगा। समझने की बात है, कोई ब्राह्मण और कोई क्षत्रिय नहीं है, कोई चमार या मेहतर अलग नहीं है। सब के अन्दर एक ही परमात्मा का प्रकाश है, एक ही अल्लाह का नूर है। ऋग्वेद में आया है—"नान्ये पन्था विद्यते अयनाय" केवल यही एक मार्ग हिन्दू भावना की रक्षा कर सकता है। बुद्ध, नानक, कबीर और दादू सब ने यही मार्ग बताया है। हिन्दू आज अपनी इस ग़लती को सुधार लें तो छूआछूत जड़ से मिट जावे। हिन्दू और मुसलमान का सवाल हल करने में एक मिनट की भी देर न लगे। सब संकीर्णता दूर हो जावे। हमारा पानी दूसरे के छू लेने से नापाक हो जाता है! ज़रा अपने दिलों के अन्दर देखो, दो नेशन्स का उसूल आज आप को कड़वा लग रहा है। लेकिन देशभक्त मौलाना आज़ाद भी अगर किसी पंडित जी के यहाँ पहुँच जायें तो वह अपनी बीबी से सलाह करेंगे कि इनको शीशे के गिलास में पानी पिलावें या पीतल के में। इस दो नेशन्स के उसूल के कायम करने वाले हम हैं, मिस्टर जिन्नाह नहीं हैं। यह हमारे दिमाग़ों के अन्दर पैदा हुआ। यह उसूल ग़लत है। यह वह फुजला है जो हिन्दू मुसलमानों दोनों के दिमाग़ों में कुछ वर्षों से जमा हो रहा है। बुराई हर धर्म के अन्दर आ जाती है। उसे निकालना पड़ेगा। आत्मा अमर है। शरीर नाशवान है। शरीर के अन्दर बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। इसी तरह धर्म की आत्मा अमर है। धर्म का शरीर यानी कर्मकाण्ड रस्म और रिवाज बदलते रहते हैं। अपनी आत्मा को ऊँचा उठाओ और ईश्वर के लिये आगे बढ़ो। छुआछूत के भूत को देश से निकाल कर बाहर कर दो। जो ईश्वर सब के अन्दर है उसके दर्शन करने की कोशिश करो। यही हमारे शास्त्र उपदेश देते हैं। वेदों और उपनिषदों में भी यही समझाया गया है। यही गीता का पाठ है। तुम इस

पर सच्चाई से आचरण करो और हिन्दू मुसलमानों के सवाल का हल शर्तिया अपने आप हो जावेगा। पहले अपने दिलों को चौड़ा कर लो।

मैंने हिन्दू धर्म की दृष्टि से समझाने की कोशिश की है कि अगर हिन्दू सचमुच अपने धर्म के ऊपर अमल करें तो देश की सारी समस्याएँ एक मिनट के अन्दर हल होती हुई दिखाई देंगी। कल के लेक्चर में मैं मुसलिम धर्म की दृष्टि से इसी बात को बतलाने की कोशिश करूँगा। मेरी निगाह में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों में धर्म का तत्व एक ही है। एक ही रोशनी है जो तरह तरह के शीशों में से चमक रही है। मैं इलाहाबाद का रहने वाला हूँ। इलाहाबाद में गंगा जमुना का संगम है। मैं हिन्दू मुसलमान दोनों को गंगा जमुना के जल की तरह मिला हुआ देखना चाहता हूँ, कि कोई तमीज़ न कर सके कि कौनसा जल गंगा का है और कौन सा जमुना का।

मैं एक छोटी सी घटना और आपके सामने रखता हूँ ३० मार्च सन १९१९ के दिन, दिल्ली के घंटाघर के नीचे हज़ारों हिन्दू और हज़ारों मुसलमान जमा थे। जिस वक्त गोली चलना शुरू हुई तो आगे की लाइन वालों की छातियों पर पटापट गोलियाँ लगने लगीं। दिल्ली शहर में जब उन गिरे हुए लोगों का जनाज़ा निकला तो वह ख़ून में इस तरह लथपथ थे कि यह मालूम नहीं पड़ता था कि कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान। चार लाशें थीं। जिसमें शायद दो हिन्दू और दो मुसलमान थे। अब बताइये कि आप किसे गाड़ेंगे और किसे फूँकेंगे। उनके चिथड़े चिथड़े उड़ गये थे। यह तमीज़ करना नामुमकिन था कि गोश्त का कौन सा टुकड़ा हिन्दू का है और कौन सा मुसलमान का। दोस्तों! हम एक मुल्क के रहने वाले एक ही गली में रहने वाले, एक कुँवे का पानी पीने वाले, हमें

किस ने बहका दिया जो हमारी यह हालत हो रही है ! हम सब किस तरफ़ जा रहे हैं ! इतनी तेज़ी के साथ हम इस ग़लत रास्ते पर बढ़ रहे हैं कि हमारी कौम मिटती जा रही है ! हमें इस घमंड में नहीं रहना चाहिये कि हम ४० करोड़ हैं। दुनिया के पर्दे पर मिस्र और यूनान जैसी कौमों का निशान नहीं रहा। फूट का रास्ता हमारी बरबादी का रास्ता है। सिर्फ़ इश्क का रास्ता, प्रेम का रास्ता, ही वह रास्ता है जिस पर चल कर हम ज़िन्दा रह सकते हैं।

रामरूप तिवारी जी वकील—भाइयों ! आपने शान्ति के साथ पंडित जी का भाषण बड़ी ख़ुशी से सुना। इसके लिये मैं आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ और पंडित जी का भी शुक्रिया अदा करता हूँ जो उन्होंने हमको सुन्दर भाषण सुनाया। मैं आप लोगों से उम्मीद करता हूँ कि आप पंडित जी के भाषण से लाभ उठावेंगे, और उससे आपका जीवन कृतकृत्य होगा।

——

इसलाम और मुसलिम संस्कृति

पब्लिक मीटिंग सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड लश्कर की तरफ से, जगह जियाजी चौक लश्कर, समय शाम के सवा छै बजे, तारीख २३ अक्तूबर सन १६४४, सभापति श्रीयुत अली हसन साहब इन्सपेक्टर जनरल आफ़ पुलिस, गवालियर।

पं० सुन्दरलाल जी—सदर साहब और भाइयों! परसों मैंने आपसे हिन्दू संस्कृति और हिन्दू मुसलिम एकता के बारे में बातचीत की थी। आज मैं इस्लाम धर्म और मुसलिम संस्कृति के बारे में अपने खयाल बताऊँगा। इससे पहिले थोड़ा सा मेल बैठाने के लिये फिर श्रीमद् भगवत गीता की बात कर लेने दीजिये। श्रीमद् भगवत् गीता को मैं संसार का अमर पुस्तकों में से मानता हूँ। जब तक मनुष्य जाति ज़िन्दा है तब तक यह ग्रन्थ जीवित रहेगा। मैं जानता हूँ कि किसी भी खोजी आत्मा को सन्तोष देने के लिये गीता बिल्कुल काफ़ी चीज़ है। लेकिन जैसी मेरी उस दिन को शिकायत थी हमारा जीवन गीता की तालीम से कोसों दूर है। गीता हमारे लिये पाठ कर लेने भर की चीज़ रह गई है, या अगर सेठ जी के पास पैसा हुआ तो लाखों की तादाद में छपवा कर बटवा देने की चीज़ रह गई है। मैं इस बारे में आपका अधिक समय नष्ट न करूँगा। गीता जिस समय लिखी गई थी उस समय देश के अन्दर तरह तरह के मतमतान्तर मौजूद थे। तरह तरह के धर्म मौजूद थे।

धर्म से यहाँ मतलब कर्मकाण्डों रस्म रिवाज से है। गीता के पहिले अध्याय में जिन जाति धर्मों और कुल धर्मों का जिक्र किया गया है, जिस तरह के वर्ण धर्म का जिक्र अर्जुन के मुँह से हुआ है, गीता ने इन सब चीजों का मेल बैठाने और उन्हें ठीक करके एक सूत्र में बाँधने की कोशिश की है। भगवान ने अर्जुन को 'यह बतलाया कि इन सब अलग अलग धर्मों के मानने वालों के अलग अलग रास्ते होते हुए भी वे ठीक रास्ते पर हैं। यही गीता का समन्वय है। यही उसकी सिन्थेसिस है। "ये यथा माम् प्रपद्यन्ते तान्स्थैव भजाम्यहम्, मम वर्तमानुवर्तन्ते मनुष्या: पार्थ सवश: ।" इन मत मतान्तरों का जिक्र करते हुये भगवान करते हैं कि जो जिस रास्ते से चलकर मेरे पास पहुँचता है मैं उसी रास्ते से उसे मिलता हूँ। हे पार्थ ! लोग अलग अलग दिशाओं से चलकर भी अंत में सब मेरे ही पास पहुँचते हैं। आप यहाँ एक सरकिल में दाएँ बाएँ बहुत से लोग बैठे हुए हैं। आप सब एक ही दिशा को चलकर मेरे पास तक नहीं आ सकते। यह विश्व भी एक सरकिल है। ईश्वर उसका केन्द्र यानी मरकज़ है। मान लीजिये कि एक खम्भा है जिसके चारों तरफ दूर दूर तक आप लोग बैठे हुए हैं, अगर आप लोग उस खम्भे तक जाना चाहें तो आप में से किसी को पच्छिम की दिशा में, किसी को पूरब की दिशा में, किसी को दक्खिन की दिशा में और किसी को उत्तर की दिशा में जाना पड़ेगा। यही गीता के इस श्लोक का भावार्थ है। गीता इस दृष्टि से सब धर्मों का समन्वय है। वह सब धर्मों को एक दृष्टि से देखने की कोशिश करती है। इसके यह मायने नहीं है कि जो कुछ भी हम समझते हैं वह ग़लत नहीं हो सकता, या हमारे पूजा के तरीकों में कोई ग़लती नहीं है। ग़लतियाँ भी सब धर्मों में यानी उनके मानने वालों के तौर तरीकों में पैदा हो ही जाती हैं। लेकिन इसका मतलब यह है

कि अगर आदमी का दिल साफ और सच्चा है तो अंत में सब धर्म उसी परमात्मा से जा मिलते हैं। अगर मैं गीता को पहिले अध्याय से लेकर १८ वें अध्याय तक आपको पूरी तरह बतलाने की कोशिश करूँ तो एक लेक्चर नहीं कई लेक्चरों की जरूरत होगी। मैंने आपके सामने इस चीज़ का सार या लुब्बे लुबाब रख दिया है।

दूसरे अध्याय में अर्जुन के सवाल करने पर स्थितप्रज्ञ की तारीफ करते हुए गीता हमें बतलाती है कि धर्म का असली तत्व अपनी आत्मा के संयम करने में है। 'काम एशः क्रोध एशः रजोगुण समुद्भवः, महाशनो महापाप्मा विद्धेनमिह वैरिणम्।' गीता बताती है कि हमारे अन्दर जो साँप छिपा है पहिले हम उसे मारें, पहिले अपने अन्दर के काम और क्रोध को जीतें। यही बड़ा वैरी और सब से बड़ा पाप है। गीता आत्मसंयम का उपदेश देती है। छोटी छोटी रस्मों, रिवाजों और कर्मकाण्ड के मुताल्लिक़ गीता बड़ी शान और सफ़ाई के साथ कहती है—"सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज," अर्थात् इन सारे धर्मों को छोड़ कर मतमतान्तरों को लात मार कर, हे अर्जुन! सीधा एक परमेश्वर को मान और केवल उसी की पूजा कर। गीता कहती है कि पिण्डदान आदि सब कर्मकाण्डों को और इसी तरह के सब परम्परा से चले आए हुए जाति धर्मों और कुल धर्मों को छोड़ कर जो अशोच्य हैं यानी जो सोचने के भी काबिल नहीं हैं, वर्णसंकर आदि के वहम से ऊपर उठकर केवल एक निराकार परमेश्वर की उपासना और आत्मसंयम यानी सदाचार की तरफ़ आओ, यही सच्चा धर्म है, आखीर में गीता ने आत्मा को पहिचानने का तरीका और मुक्ति प्राप्त करने का तरीका भी बताया है, सीधे सादे शब्दों में अपने अन्दर एक ईश्वर को, सब के अन्दर अपने को और उस एक ईश्वर के अन्दर सब को देखो,

अपनी नज़र के अन्दर जब आप इस बात को पैदा कर लेंगे तो यही मुक्ति है, यही गीता की मुक्ति का आदर्श है, जिस वक्त यह समता आत्मा में पैदा हो जाती है तो यही समता मुक्ति के नाम से पुकारी जाती है। गीता के इसी आदर्श के अनुसार मैं हिंदू मुसलमानों की एकता की बड़ हाँकता रहता हूँ। इसमें मुझे कोई शर्म नहीं है, मुझे इससे संतोष है कि मैं अपने जीवन में अपने कमजोर हाथ और पैरों से अपने भाइयों को मिलाने की कोशिश करता हूँ। मैं दिल से चाहता हूँ कि हमारा जीवन गीता के अनुसार हो। हिन्दू ज़रा आँखें खोलकर देखें वे भगवतगीता का नाम लेते हैं और उनमें छुआ छूत, जाति पाति भरी हुई है। उनका पानी दूसरों के छूने तक से नापाक हो जाता है। 'विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि शुनि चैव श्वपाके च पंडिता: शमदर्शिन:' गीता बतलाती है कि पंडित वही है जो गाय, हाथी, कुत्ते, ब्राह्मण और चाण्डाल को एक निगाह से देखता है। इसका मतलब यह नहीं कि बजाय गाय दुहने के हम कुत्ते को दुहने लगें। इसका मतलब यह है कि इन सब के अन्दर हम एक ही आत्मा को देखें, झूठा भेद-भाव न बरतें, किसी को ग़ैर न समझें, एक कानिस्टिबिल जो एक दुबे के घर में पैदा हुआ है एक उस कानिस्टिबिल से जो मुसलमान या ठाकुर के घर में पैदा हुआ है गीता के अनुसार अपनी श्रेष्ठता का दावा नहीं कर सकता। अब मैं इस्लाम की तरफ आता हूँ। मैंने उसी प्रेम के साथ कलाम मजीद को पढ़ा है जिस प्रेम के साथ मैंने गीता का अध्ययन किया है।

हज़रत मोहम्मद की जीवनी का अध्ययन मैंने बड़े प्रेम और लगन से किया है। मैं कह सकता हूँ कि उनकी ज़िन्दगी का एक एक वाक़ा मेरी छाती पर कन्दा है। मुझे तो गीता में क़ुरान और क़ुरान में गीता नज़र आती है। इन दोनों किताबों में कोई

फ़रक या झगड़े की चीज़ नज़र नहीं आती, यह चीज़ है जिसे मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। जिस तरह भगवत गीता की पूरी व्याख्या के लिये कई दिन की ज़रूरत है उसी तरह अगर मैं मोहम्मद साहब की जिन्दगी या कलाम मजीद के बारे में आपको बताना शुरू करूँ और सिर्फ़ मोटे मोटे वाकेयात ही सामने रखूं तो कई दिन लग जावेंगे। ये सब बातें इस छोटे से लेक्चर में नहीं आ सकतीं। आज बहुत हिन्दुओं के दिलों के अन्दर इसलाम के पैग़म्बर की जो इज्ज़त और कद्र होनी चाहिये वह नहीं है। ऐसे ही मुसलमानों दिलों में गीता और कृष्ण की जो इज्ज़त होनी चाहिए वह नहीं है। हमने एक दूसरे को समझा नहीं है, इसी लिए हम एक दूसरे को दिल से प्यार नहीं कर रहे हैं। जब तक हम एक दूसरे की कद्र न करेंगे जब तक एक दूसरे को ठीक समझ न लेंगे, जब तक हमें दूसरे की शक्ल में शीशा की तरह अपनी शक्ल न दिखलाई न देगी' तब तक सची मुहब्बत और सच्ची एकता तक पहुंच न सकेंगे। मैं अब थोड़े से में अरब की उस ज़माने की हालत का चित्र आपके सामने रखने की कोशिश करूँगा, जिस समय कि मोहम्मद साहब का जन्म हुआ था।

मोहम्मद साहब का जन्म जिस समय अरब में हुआ था, उस समय की हालत का अन्दाज़ा लगाइये। मज़हबी और नैतिक हालत को अभी छोड़ दीजिये, केवल राजनैतिक हालत को लीजिये। आज चालीस करोड़ हिन्दुस्तान के लोग हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए बेताब हैं। जैसी राजनीतिक हालत आज हिन्दुस्तान की है उस वक्त अरब की हालत इसके कहीं बिगड़ी हुई थी। हिन्दुस्तान में एक अँग्रेज़ कौम ही हमारी मालिक हुई है। मैं मालिक लफ़्ज़ फ़ख्र के साथ नहीं कह रहा हूँ जब मैं यह लफ्ज़ कहता हूँ तो वह मेरे दिल में तीर की तरह चुभता है।

मतलब यह है कि इस वक्त हमारे ऊपर एक ग़ैर कौम की हुकूमत है, और उस समय अरब के ऊपर तीन तीन ग़ैर मुल्कों की हुकूमत थी। पूर्वी हिस्से में ईरान के बादशाह 'खुशरो' की हुकूमत थी। उत्तर में रोम के सम्राट की हुकूमत थी, पश्चिम में ज्यादातर अबीसीनिया के ईसाई बादशाह का राज था, और दक्खिन का बहुत सा हिस्सा ईरान और अबीसीनिया के सम्राटों के मातहत था। अरब का केवल एक छोटा सा बीच का टुकड़ा जिसमें मक्का और मदीना के शहर थे आज़ाद था। और इस आज़ाद टुकड़े पर भी इन तीनों बाहर की ताकतों के दाँत थे। यहां तक कि मोहम्मद साहब की पैदाइश के चन्द ही साल पहले अबीसीनिया के ईसाई सम्राट ने खुद मक्के पर हमला किया था. जिसका कुरान के अन्दर भी जिक्र आता है। आप इस तरह समझिये कि ग्वालियर का छोटा सा हिस्सा आज़ाद हो और उसके एक तरफ हिन्दुस्तान में जरमनी, दूसरी तरफ जापान, तीसरी तरफ अँग्रेज और चौथी तरफ़ इटली या किसी भी ग़ैरे ग़ैरे की हुकूमत हो। इस तरह तीन पॉलिटीकल पावर्स रोम, असीबीनिया और ईरान अरब पर ज़बरदस्ती कब्ज़ा किये हुए थे और उनके बीच में केवल एक छोटा सा हिस्सा आज़ाद था। अब सवाल यह है कि जिस तरह हम आजादी के लिए हाथ पाँव मारते हैं वह क्यों नहीं मारते थे ? इस वजह से क्योंकि वह नाकाबिल थे। उस दिन का अरब सैकड़ों छोटे छोटे कबीलों के अन्दर बँटा हुआ था। हर कबीले का अलग देवता था। किसी का देवता किसी जानवर की शकल का किसी का मादा; किसी का नर किसी का तांबे, किसी का पत्थर का तो किसी का गुँदे हुए सूखे आटे का। मतलब यह कि हर कबीला अपना अलग देवता रखता था, वह अरब की मजहबी हालत थी। जब इन कबीलों में लड़ाई होती थी तो उसके मुकाबिले में हमारे यहाँ

के हिन्दू मुसलमानों की लड़ाइयाँ पानी भरती हैं। कई कई कबीलों में सैकड़ों वर्षों तक लड़ाई जारी रहती थी। हर कबीला दूसरे कबीले का जानी दुश्मन था। अरब की जिन्दगी जिन्दगी नहीं थी। सदाचार का यह हाल था कि वहाँ के लोग फ़ख्र के साथ शायरी में अपने बाप दादों के सामने अपने-अपने दुराचार की बातों का बखान करते थे। किसी जमाने के राजपूतों की तरह अरबों में जब लड़की पाँच या छै वर्ष की होती थी तो उसका बाप एक दिन अपनी बीवी से कहता था कि इसे अच्छे-अच्छे कपड़े पहिना दो मैं इसे इसकी माओं के यहाँ पहुँचा आऊँ। बीवी उसे कपड़े पहिना देती, बाप उसे साथ ले जाता, जंगल में अपने हाथ से एक चार फुट गहरा गढ़ा खोद कर उसमें उसे धक्का दे देता। ऊपर से मिट्टी ढंक कर चला आता। हज़ारों लड़कियाँ इस तरह जिन्दा दफ़न कर दी गईं। शराब पी पी कर लोगों की मौतें एक मामूली बात थी। जुआ भी शराब के साथ साथ खूब चलता था। जुए में लोग अपनी बीवियों तक हार देते थे। यह उस वक्त अरबों की हालत थी, और यह था उनका इखलाक़। जब दो कबीलों में लड़ाई होती थी और हारे हुए कबीले के लोग क़ैद होकर आते थे तो उनके साथ उनके देवता भी क़ैद करके लाये जाते थे। ऐसी हालत में अरबों में एक अद्भुत आदमी पैदा हुआ। दोस्तों! उस पाक परवरदिगार का ही वह एक अंश था, उसी की ताक़त थी जो मोहम्मद साहब के रूप में प्रगट हुई, मोहम्मद साहब में उस पाक परवरदिगार की शक्ति मौजूद थी। गीता में "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत"—और "परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम, धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।" ग़लत नहीं कहा गया, जिस जिस समय धर्म की ग्लानि हो जाती है, अंध विश्वास बढ़ जाते हैं, हम लोगों के बीच में

आकर वह शक्ति हमें रास्ता बतलाती है। उसे अवतार पैग़म्बर या तीर्थंकर जिस नाम से चाहे पुकारो असलियत वही है। वही सनातन सीधा रास्ता बतलाने के लिये मोहम्मद साहब अरब में पैदा हुए। चालीस साल की उम्र तक वह अपने मुल्क की हालत पर सोचते रहे। रात और दिन वह इस बात पर विचार करते रहे कि उनके प्यारे वतन और आस पास की दुनिया की हालत कैसे सुधरे। इन चालीस साल में से आखिरी तीन चार साल उन्होंने गहरी तपस्या में बिताए। मक्के के पास एक छोटी सी पहाड़ी हीरा नाम की है। उस पहाड़ी में मोहम्मद साहब चालीस चालीस दिन तक कभी-कभी बग़ैर खाए पिये पड़े रहते थे। वे रातों अपने अल्लाह के सामने रोते थे और दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को रास्ता दिखा, मुझे रास्ता दिखा कि मैं उसे ठीक रास्ते पर ला सकूँ। चालीस चालीस दिन तक वह हीरा के ग़ार में बग़ैर दाना पानी के पड़े रहते थे। इस गहरी, और सच्ची तपस्या के बाद उन्हें एक दिन रोशनी दिखलाई दी। सच्ची और खोजी आत्माओं को इसी तरह हर देश और हर युग में अल्लाह से रोशनी मिलती रही है। इन-सान तक उस परमेश्वर का सन्देश पहुँचाने वाले हर क़ौम में हुए हैं। दोस्तो! हम अगर दूसरे के बाप को बाप नहीं कह सकते तो चचा कहना तो सीखें। हम कभी कभी शिष्टता से भी गिर जाते हैं। दूसरों के बुज़ुर्गों की इज्जत अपने अन्दर पैदा करो। हम आज़ाद और महान होना चाहते हैं। लेकिन इससे पहले हममें सच्ची आदमियत पैदा होने की ज़रूरत है। मुसलमानों! अगर तुम सचमुच आज़ाद और ख़ुशहाल हो कर रहना चाहते हो तो दूसरों के धर्म ग्रन्थों को देखो। भगवत गीता को पढ़ कर देखो। हिन्दुओं! अगर सचमुच तुम्हें आज़ाद और ख़ुशहाल होना है तो, मोहम्मद साहब की जिन्दगी और

कलाम मजीद को प्रेम के साथ पढ़ो। तुम दोनों को गीता के अन्दर .कुरान और .कुरान के अन्दर गीता दिखाई देगी। जब मोहम्मद साहब ने अपने अल्लाह के सामने रो रो कर दुआएँ मांगी तो अल्लाह ने उन्हें रास्ता दिखलाया। वह दुनिया में इसी काम के लिए आए थे। हम बजाय .खुदा के .खुदी को बड़ा समझते हैं! अपने दिलों के काबे में हमने खुदा को बैठा रखा है! खुदी को धक्का दे कर बाहर करो तो खुदा वहाँ बैठा दिखाई देगा। इस रोशनी ही के नतीजे की शक्ल में वह किताब पैदा हुई, जिसे कलाम मजीद, कलाम पाक, या .कुरान शरीफ़ कहते हैं। मुमकिन है कि कलाम मजीद की तालीम के बारे में मेरी राय, उसी तरह कुछ मुसलमानों की राय से न मिले जिस तरह श्रीमद् भगवत् गीता की तालीम के बारे में कुछ हिन्दुओं की राय से नहीं मिलती। मैं मजबूर हूं। मैंने जो देखा और पढ़ा है और जिसे मैं ठीक समझता हूँ मैं वही कह सकता हूँ।

जिस तरह मैंने गीता का सार आपके सामने उसी तरह कलाम मजीद का सार रखने की कोशिश करूँगा। कुरान और गीता में आपको बहुत सी मिलती जुलती बातें दिखाई देंगी। दोनों को शुरू से आखीर तक मिला कर पढ़ने से बहुत बड़े दरजे तक एक की तसवीर दूसरे में दिखाई देगी। कलाम मजीद में अपने धर्म के दुश्मनों से लड़ाई का सवाल आता है। गीता में भी "तस्माद्युध्यस्व भारत!" इसी तरह की लड़ाई का जिक्र है। महाभारत के युद्ध में दोनों तरफ़ लड़ने वालों में, मामा, चाचा, भाई, दादा और दूसरे सगे रिश्तेदार मौजूद थे। गीता में अर्जुन ने एतराज किया था कि हे कृष्ण! यह जो मेरे समाने लड़ने को खड़े हैं, यह सब मेरे चाचा, ताया, और मामा वग़ैरा हैं। अरब के अन्दर भी मक्के के एक एक घर में कुछ आदमी मुसलमान हो गए यानी अलग अलग बुतों की जगह

एक निराकार ईश्वर को पूजने लगे, तो बाक़ी अपने पुराने बुतों को ही पूजते रहे। इसलिए जब मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानो में लड़ाई हुई तो उनमें भी मामा, चाचा, दादा और दूसरे रिश्तेदार दोनों तरफ़ मौजूद थे। गीता के अन्दर जिस तरह ख़ास हालतों में इन सब से लड़ाई की इजाज़त दी गई है उसी तरह क़ुरान के अन्दर भी ख़ास हालतों में इनसे लड़ाई की इजाज़त दी गई है। इससे पहले शुरू के तेरह बरस तक क़ुरान का मिशन पूरी शान्ति के साथ चला। क़ुरान ने उन तेरह साल तक अरब के उन ग़ैर मुसलमानों के ऊपर भी हाथ उठाने की इजाज़त नहीं दी, जो मुसलमानों को उनके नए दीन की वजह से तरह तरह की तकलीफें दे रहे थे। क़ुरान में इसका बार बार ज़िक्र मौजूद है—

'यहूदियों की किताब तौरेत में हुक्म है कि तुम जान के बदले में जान ले सकते हो, आँख के बदले में आँख, नाक के बदले में नाक, कान के बदले में कान और दाँत के बदले में दाँत, ऐसे ही अगर कोई तुम्हें घायल कर दे तो तुम उसका भी बदला ले सकते हो, लेकिन जो कोई माफ़ कर दे और बदला न ले तो उसके लिए ज्यादा अच्छा है, इससे माफ़ कर देने वाले के पापों का प्रायश्चित हो जायगा।" (५-४५)

"बुराई और भलाई बराबर नहीं हो सकती, बुराई का बदला भलाई से दो और तुम देखोगे कि जिसे तुमसे दुश्मनी थी वह भी तुम्हारा गहरा दोस्त हो जायगा।"
(४१-३४)

"बुराई का बदला भलाई से दो" (२३-९६)

इसी तरह की और बहुत सी आयतें हैं जिनमें साफ़ लफ़्ज़ों में अरब के उन ग़ैर मुसलमानों का ज़िक्र करते हुए जिन्होंने

मुसलमानों को उनके घरों से निकाल दिया था और जो उन्हें तरह तरफ की तकलीफें दे रहे थे, मुसलमानों को बार बार यही सलाह दी गई है कि इन सब सख्तियों को सब्र के साथ बरदाश्त करो और बुराई का बदला भलाई से दो। "इन्नल्लाह युहिब्बुल मोहसनीन" यानी अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं। बराबर तेरह बरस तक कुरान की आवाज बदली नहीं। यह बातें जरा गौर से सुनने की हैं। मैं मुसलमानों से पूछना चाहता हूँ कि वे कलाम मजीद के अन्दर मुझे एक भी आयत ऐसी बता दें जिसमें जबरदस्ती तलवार के जोर से किसी को अपने मजहब में लेने की इजाजत दी गई हो या कुरान ने किसी शख्श के ऊपर उसके मजहब की वजह से हमला करने की इजाजत दी हो, कुरान का हुक्म है "ला इकरहा फ़िद्दीन" (२-२५६) ला माने नहीं, इकरहा माने जबरदस्ती, फी माने (इन दी मेटर आफ) बारे में, दीन यानी धर्म यानी "मजहब के मामले में किसी के साथ कोई जबरदस्ती नहीं की जा सकती" यह कुरान का साफ और सरीह हुक्म है। एक दूसरी जगह मोहम्मद साहब से कहा गया है कि इन लोगों से कह दो—"तुम्हारा मजहब तुम्हरे लिए है और मेरा मजहब मेरे लिए है।" कुरान के अन्दर इस तरह की भी काफी आयतें हैं कि—"ऐ मोहम्मद ! जो लोग तेरी बात नहीं मानते क्या तुझे उन पर चौकीदार बना करके भेजा गया है ? क्या तू किसी से जबरदस्ती करेगा ? मोहम्मद ! कह दे कि मेरा काम सिर्फ शान्ति से समझा देना है और बस।"

कुरान ने तेरह वर्ष की उन लगातार ज्यादतियों के बाद जो अरब के गैर मुसलमान मुसलमानों के साथ करते आये थे, मकाबला करने की इजाजत दी। इन ज्यादतियों की कुछ मिसाल मैं आपके सामने रखता हूँ। कई मुसलमानों को गरम रेत के

ऊपर नंगा पटक कर ऊपर से पत्थर रख दिया जाता था, अरब की गरमी और धूप के अन्दर उन्हें छोड़ दिया जाता था, और कहा जाता था कि "दे मोहम्मद को गालियाँ! छोड़ इस्लाम!" यासिर और उसकी बीबी समीआ दोनों को केवल अरब की बुतों की पूजा छोड़कर एक निराकार अल्लाह की पूजा शुरू कर देने के गुनाह में बर्छियाँ भोंक भोंक कर मार डाला गया। अदी के बेटे खुबैब को बड़ी बेरहमी के साथ सताया गया। शिकंजे में कस, कर उससे कहा गया—"इस्लाम छोड़ दो और हम तुम्हें छोड़ देंगे" उसने जवाब दिया—"सारी दुनिया हाथ से जाती रहे लेकिन इस्लाम नहीं छोड़ूँगा!" उसके हाथ पैर एक-एक करके काटे गए! खुबैब के टुकड़े टुकड़े कर दिये गए। माँस की एक एक बोटी हड्डियों से अलग कर दी गई। खुबैब शहीद हो गए, पर एक निराकार परमेश्वर और उसका संदेशा सुनाने वाले पर यक़ीन खुबैब के दिल या ज़बान से न मिट सका! वह कोई छोटी मोटी हस्ती नहीं थी जिसने अरब के उन जाहिलों को इतना ज़बरदस्त पाठ पढ़ा दिया और उनके अन्दर यह बल बूता पैदा कर दिया। मैं तो यह मानता हूँ कि उसके अन्दर उस पाक परवरदिगार का एक अंश मौजूद था। कुरान देखने की चीज़ है। उसमें आयतों पर आयतें भरी पड़ी हैं जिनमें यह साफ़ साफ़ कहा गया है कि "मैं कोई नया मज़हब क़ायम नहीं कर रहा हूँ।" "क़ुरान अपने से पहिले के सब मज़हबों को सच मानता है और केवल उन्हीं पुरानी सच्चाइयों को दुहराता है।" "दुनिया में ऐसी कोई क़ौम नहीं जिनके अन्दर पैग़म्बर पैदा न हुए हों। जिसके अन्दर कोई रसूल न भेजा गया हो।" "दुनिया में कोई ऐसा ज़माना नहीं हुआ जब कि अल्लाह की तरफ़ से कोई किताब न आई हो।" "हर ज़माने के लिये एक किताब है।" "मोहम्मद कोई नया पैग़म्बर नहीं, कोई अनोखा

रसूल नहीं ऐसे ऐसे लाखों रसूल दुनिया में हो चुके हैं।" "उनमें से कुरान के अन्दर चन्द के नाम दिये गए हैं बाकी के नाम नहीं दिये गये हैं।" "कुरान उन सब पहले के मजहबों की तस्दीक करता है।" उन्हें वेरीफ़ाई करता है। उन्हें सच्चा ठहराता है।" यह कुरान की मुख्तलिफ़ आयतों के लफ़्ज़ी तरजुमे हैं।

अपने से पहिले की धार्मिक किताबों के लिये भी क़ुरान मजीद में 'कुरान' लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया है, कुरान के मत से वेद और गीता कुरान हैं। क़ुरान कहता है इस्लाम कोई नया मज़हब नहीं है। जो भी केवल एक अल्लाह को मानता है, और नेक काम करता है, वह मुसलमान है। कुरान की रू से एक ईश्वर को मानने वाले सब मुसलमान हैं। मुसलमान के लफ़्ज़ी माने यह हैं, एक अर्थ तो यह किया जाता है कि जो भी शान्ति यानी सुलह चाहता है वही मुसलमान है। दूसरा अर्थ यह है कि जिस किसी ने एक अल्लाह के सामने सर झुकाया वही मुसलमान है, यही कुरान मजीद में मुसलमान की तारीफ़ है। एक अल्लाह को मानने और नेक काम करने के अलावा .कुरान में और कोई मज़हब नहीं बनाया गया। कलाम मजीद में केवल पाँच बातें ऐसी बताई हैं जिनका हर मुसलमान को मानना लाज़मी है, (१) अल्लाह (२) फ़रिश्ते, हर मज़हब में किसी न किसी तरह के ऐसे देवताओं या दूसरी हस्तियों को माना गया है। ज़ाहिर है कि मनुष्य और ईश्वर के बीच इस तरह की योनियाँ हैं जो मनुष्य से ऊँची हैं, (३) तीसरी चीज़ दुनिया के सब पैग़म्बरों को मानना है, वह आदमी मुसलमान नहीं है जो इस्लाम से पहिले के पैग़म्बरों को नहीं मानता है। .कुरान की आयत का तर्जुमा है कि—"जो लोग फ़र्क़ करते हैं एक नबी में और दूसरे नबी में, एक को छोटा और दूसरे को बड़ा मानते

हैं, एक को मानते और दूसरे को नहीं मानते वह सचमुच काफ़िर है ।" (४) कुरान और उससे पहले की सब ईश्वरीय किताबें (५) कर्मों का फल ।

अब मैं कुरान और गीता की कुछ बातों का मुकाबला आपके सामने करना चाहता हूँ । 'कुरान के पहले सूरे में परमात्मा का एक नाम "रब्बुलआलमीन" आया है । उसके लफ़्ज़ी मानी 'सर्वलोक महेश्वरम्' हैं । यानी सब दुनियाओं का मालिक । गीता में परमात्मा को 'सर्वलोक महेश्वरम्' कहा गया है । पहले सूरे में अल्लाह से प्रार्थना की गई है । "हमें सीधा रास्ता दिखा" (एहदेनस्सेरातल मुस्तक़ीम) ऋग्वेद का मन्त्र है 'अग्ने नय सुपथा...' यानी हे ईश्वर ! हमें सीधे रास्ते पर ले चल ! गीता के अन्दर ईश्वर को 'ज्योतिषा मपित ज्योति' कहा गया है । यानी, ज्योतियों के ज्योति, कलाम मजीद में ईश्वर को 'नूरुल अला नूरिन' कहा गया है । दोनों के ठीक एक ही माने हैं । इसी तरह की और भी बहुत सी मिसालें दी जा सकती हैं । मेरे पास वक्त नहीं है । संस्कृत में एक धातु इल् है जिसका अर्थ स्तुति करना या पूजा करना है । ऋग्वेद में ईश्वर के लिए इसका प्रयोग किया गया है "अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव... 'इस इल धातु से 'इला' शब्द बनता है जिसके अर्थ हैं—वह जिसकी स्तुति की जावे या पूजा की जाय । 'इला' शब्द का वेदों में जगह जगह ईश्वर के लिए इस्तेमाल किया गया है । ऋग्वेद का एक पूरा सूक्त 'इला' के नाम पर है । ऋग्वेद के 'इला' और कुरान के अल्लाह में कोई फ़र्क नहीं है । एक नदी है । एक समुद्र है जो अरब से हिन्दुस्तान तक और हिन्दुस्तान से अरब तक हिलोरें मार रहा है । आखिर अल्लाह एक है और हम सब उसके बन्दे हैं ! मुझे कोई फ़र्क दिखलाई नहीं देता । तब यह फ़र्क कहाँ से आया ? हमारे अन्दर जो

शैतान है वह दुई का शैतान है, जो हमें एक अल्लाह को नहीं देखने देता। वही हमें एक नहीं होने देता। इस शैतान को निकाल बाहर करो। यही मुक्ति का रास्ता है। सियासी नुक्ते नज़र से भी हमें आज़ादी मिलने का यही रास्ता है। इसके सिवाय मुक्ति का और कोई मार्ग नहीं है।

मैंने आपके सामने बतलाया था कि मोहम्मद साहब जब पैदा हुए थे उस वक़्त अरब की क्या हालत थी। उस वक्त हिन्दुस्तान की निस्बत मज़हबी दृष्टि से सामाजिक दृष्टि से या राजनीतिक दृष्टि से वहाँ की हालत कहीं ज्यादा गिरी हुई थी। मोहम्मद साहब ने केवल २० साल तक उपदेश दिया। उसका नतीजा क्या हुआ? महज़ २० साल में उन्होंने जो कोशिश की उसका नतीजा यह हुआ कि उनकी ज़िन्दगी में वह अरब जो पहले पाँच टुकड़ों में बँटा हुआ था और दूसरों के कब्ज़े में था, एक मुत्तहिद और आज़ाद मुल्क हो गया। जो अरब सैकड़ों क़बीलों में बटा हुआ था वह अपने सब छोटे छोटे देवी देवताओं को फेंक कर एक मुत्तहिद क़ौम, एक संयुक्त राष्ट्र बन गया। वह अरब जो दूसरों की गुलामी में था जो ईरान और रोम के सम्राटों के सामने सर झुकाता था, रोम के मुक़ाबले की एक ज़बरदस्त शक्ति होकर आगे बढ़ा। मैंने दुनिया की तवारीख़ के वर्क़े लौटे हैं। मुझे दुनिया की हिस्ट्री के अन्दर दूसरा ऐसा कोई इंसान नहीं दिखलाई दिया, जिसने २० साल की ज़िन्दगी के अन्दर यह चीज, पैदा कर ली हो। मुझे ऐसी कोई आत्मा नहीं दिखलाई पड़ती जिसने इस थोड़े से समय में सैकड़ों क़बीलों को मिला कर, एक क़ौम बना कर इस तरह आसमान पर बिठा दिया हो। मोहम्मद वाज़ दी ग्रेटेस्ट पेट्रीओट इन दी वर्ल्ड। केवल देशभक्त की हैसियत से भी मोहम्मद साहब से बढ़ कर सफल देशभक्त दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ। अगर हम

इस्लाम की तालीम की तरफ़ निगाह डालें तो देखेंगे कि .कुरान और हदीसों में उसी तरह नेक काम करने की हिदायतें भरी पड़ी हैं, जिस तरह दूसरी धार्मिक किताबों के अन्दर। बार बार मोहम्मद साहब से पूछा गया कि इस्लाम किसे कहते हैं? मोहम्मद साहब ने जवाब दिया "जबान को पाक रखना और मेहमान की खातिर करना।" पूछा गया कि ईमान क्या है? जवाब मिला "सब्र करना और दूसरों की भलाई करना" फिर किसी ने पूछा कि ईमान क्या है। जवाब दिया—"जब तुझे नेक काम करने से खुशी हो और बुरा काम करने से दुःख हो तब तू ईमान वाला है।" एक और जगह मोहम्मद साहब ने कहा है—"ईमान आदमी को हर तरह के जुल्म से रोकने के लिए है। कोई मोमिन किसी पर जुल्म नहीं कर सकता!" एक और जगह कहा है—"वह आदमी मोमिन नहीं है जो खुद पेट भर कर खा लेता है और उसका पड़ोसी पास ही भूखा पड़ा रहता है। मोमिन वह है जिसके हाथों में सब आदमी अपनी जान और माल को सौंप कर बेखटके रहें।" .कुरान में लिखा है कि—"क्या तुमने सोचा है कि दीन को झूठा ठहराने वाला आदमी वह है जो किसी यतीम को सताता है और जो ग़रीब को खाना देने पर जोर नहीं देता। ऐसा आदमी जब नमाज पढ़ता है तो उस पर अफ़सोस है! क्योंकि वह नमाज के असली मतलब की तरफ ध्यान नहीं देता। वह सिर्फ़ दिखावा करता है।" एक और जगह मोहम्मद साहब ने कहा है कि "जो आदमी एक तरफ़ तो नमाजें पढ़ेगा, रोजे रक्खेगा और खैरात करेगा और दूसरी तरफ़ किसी को बुरा कहेगा या किसी पर झूठा इल्जाम लगाएगा या बेईमानी करके किसी का माल खा जायगा या किसी का खून बहाएगा, या किसी को दुःख पहुँचाएगा, ऐसे आदमी की नमाजें उसके रोजे और खैरात कोई उसके

काम न आवेंगे"। मोहम्मद साहब से किसी ने एक बार पूछा कि नमाज़ कै बार पढ़ूँ? जवाब मिला कि ५ बार। उसने फिर कहा कि व्यापार और काम काज की वजह से मुझे इतनी फ़ुर्सत नहीं मिलती। तो जवाब मिला कि 'तीन बार पढ़ लिया करो।' उसने कहा कि और रिआयत कर दीजिये, जवाब मिला कि "सुबह शाम पढ़ लिया करो।" हज़रत मोहम्मद ने ईरानी मुसलमानों को फ़ारसी में और यूनानी मुसलमानों को यूनानी में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी थी। मुसलमानों! क़ुरान के मुताबिक़ कोई ज़बान दूसरी ज़बान से ज्यादा पाक नहीं। हिन्दुओं! सच यह है कि उस पाक परवरदिगार की नज़रों में न संस्कृत अरबी से ज्यादा पाक है और न अरबी संस्कृत से, उसकी नज़रों में सब ज़बानें बराबर हैं और सब से बढ़ कर दिल की ज़बान है।

मेरी नज़र में वेद के मन्त्रों और कुरान की आयतों में कोई फ़र्क नहीं है। मुझे तो आजकल के हिन्दू और मुसलमान दोनों ज्यादातर कर्मकाण्ड और सिर्फ़ दिखावे के नमाज़ रोज़ों में लगे हुए दिखाई पड़ते हैं। एक हिन्दू शास्त्रकार का कहना है कि जो लोग कर्मकाण्ड में फँसे हुए हैं वे गायों के रंगों को देखते हैं और जो ज्ञानी हैं वे दूध को देखते हैं। गाएँ तरह तरह के रंग की होती हैं लेकिन दूध सब का सफेद! हिन्दुओं और मुसलमानों! गीता और कुरान दोनों की बिना पर ही मैं यह सब कह रहा हूँ। हमारा ध्यान आज सिर्फ़ खतने, चोटी, दाढ़ी और जनेऊ जैसी ऊपरी चीज़ों की तरफ़ जा रहा है। अगर हम दिलों को देखें तो हमें उनमें परवरदिगार मिल जावे! मज़हब इश्क की चीज है। प्रेम की चीज़ है। वह लड़ाई की चीज नहीं है। हम इस जन्नत की चीज को आज कहाँ कीचड़ में घसीट रहे हैं! धर्म का सार मैंने आपके सामने रख दिया।

नौजवानों! मेरे दिल के अन्दर एक आग सी लगी है। मैं आपसे अपील करता हूँ कि इस मुल्क को बचालो! यह कम्बख्त आपस की फूट ही इस देश का नाश कर रही है। और इस जन्नत निशान हिन्दुस्तान को दोजख़ बना रही है! कुरान में लिखा है—"अल्लाह किसी कौम की हालत नहीं बदलता।" हिन्दू मुसलमानों दोनों के ज्यादातर बड़े बड़े नेता जो अपने अपने धर्म को बचाने की डींग हाँकते हैं मुझे धर्म और दीन से कोसों दूर दिखाई देते हैं। अगर इन दोनों कौमों के खास खास नेताओं की गर्दन से नीचे की तस्वीरें ली जावें तो एक सी दिखाई देंगी। ये सब के सब अंग्रेज दिखाई देंगे।

मैं किसी ख़ास संस्था की बुराई नहीं कर रहा हूँ। अगर गलती इसमें है तो उसमें भी है। कांग्रेस, हिन्दूसभा, या मुसलिम लीग कोई गलती या जिम्मेवारी से बिलकुल ख़ाली नहीं है। मैं सिर्फ़ इतना ही कहना चाहता हूँ कि हमारी समस्याएँ लड़ाई झगड़े से नहीं सुलझ सकतीं। मैं एक ख़ास मशहूर शहर के—नाम न लूँगा—ऐसे दो सज्जनों से वाकिफ़ हूँ जिनमें से एक हिन्दू संस्कृति और हिन्दू कलचर को बचाने का दावा करता है और दूसरा इसलाम और मुसलिम कलचर को बचाने का। दोनों नेता हैं। दोनों वकालत करते हैं। विलायत में भी शायद साथ ही साथ पढ़े हों। हिन्दू और मुसलमान दोनों समझते हैं कि वे हमारे धर्म की रक्षा करेंगे। म्युनिसिपेलटी और एसम्बलियों में चुने जाने के लिए दोनों अपने अपने धर्म की दुहाई देकर कोशिश करते हैं। और फिर रात को साथ बैठ कर दोनों एक ही जायज, नाजायज, चीजें खाते और पीते हैं। यारों! किस धुन में पड़े हो? वह ईश्वर अल्लाह जो हम सब के ऊपर है उसे चाहे संस्कृत में याद करो चाहे अरबी में याद करो वह किसी में कोई फ़र्क़ नहीं मानता। चाहे पूरब के रास्ते

से जाओ चाहे पच्छिम के रास्ते से वह सब रास्तों से मिलता है। उसे किसी नाम से आवाज़ दो, किसी नाम से उसे पुकारो अगर नाम दिल से लिया गया है तो वह बोलेगा। तुम खुशी से अपनी अपनी पूजा नमाज़ करते रहो। अपने सब रीति रिवाजों को छोड़ ही दो यह मैं नहीं कह रहा हूँ। लेकिन अलग अलग संस्कृतियों के नाम पर अपने रोज़मर्रा के रहन सहन और मिली जुली जिन्दगी के टुकड़े टुकड़े मत कर डालो। मिसाल के तौर पर ज़बान के सवाल को लो एक सीधी सादी मिली जुली हिन्दुस्तानी ज़बान को एक ओर संस्कृत की तरफ़ और दूसरी ओर अरबी फ़ारसी की तरफ़ खींच कर उसके टुकडे टुकड़े कर देने की प्रवृतियाँ गलत और मुल्क के लिए नाशकर हैं। जबानें बाहर के शब्दों को लेकर ही मालामाल होती हैं। फ़ारसी, अरबी, तुर्की वगैरह के सैकड़ों लफ़्ज हमारी मिली जुली क़ौमी जबान की निधि बन चुके। उन्हें निकालना पागलपन है। अंग्रेजी के सैकड़ों शब्द भी हमेशा के लिये हमारे हो चुके। जब रेल पर टिकट लेने जाते हो तो प्रवेशपत्र कहने से काम नहीं चल सकता। टिकट, रेल, अंजन, स्टेशन, पार्सल को कहीं भुलाया जा सकता है? अंग्रेज इस मुल्क से निकल जावेंगे लेकिन, रेल टिकट और पार्सल कभी नहीं निकल सकते। मुसलमानी हुकूमत के जमाने की ऐसी ही सैकड़ों चीजें हमारे अन्दर मौजूद हैं। जो नहीं निकाली जा सकतीं। उन चीजों से हिन्दुस्तानी जिन्दगी और हिन्दुस्तानी कलचर को चार चाँद ही लगे हैं। बिस्कुट और सोडा वाटर को भी अब देश से नहीं निकाला जा सकता। हमारी आये दिन की जिन्दगी में आधे से ज्यादा शब्द दूसरी भाषाओं के इस्तेमाल होते हैं। किस किस को निकाल कर फेंकोगे? क्या 'गुलाब' को निकाल कर फेंकोगे? क्या 'हलवे' का नाम बदल दोगे या खाना

छोड़ दोगे। मुसलमानों की शादियाँ भी मैंने देखी हैं। वही कंगन, तेल, कलेवा, हलदी, क्या क्या नहीं होता ? यह सारी की सारी रस्में जब मौलवी साहब निकाह पढ़ा कर चले जाते हैं तब घर के अन्दर जिस तरह हिन्दुओं में होता हैं उसी तरह मुसलमानों में अदा की जाती हैं। यहाँ पर मुसलमान काफी तादाद में मौजूद हैं। बतायें कि कन छेदन और नकछेदन कौन मुसलमान नहीं कराता। मेरा तो यही कहना है कि कलाकन्द भी दोनों मिल खाओ और बर्फी भी। ग़लती भी करो तो दोनों मिल कर करो! अगर आप यह सब व्यर्थ का भेद भाव छोड़ दें तो आजादी आपके पैर चूमती हुई दिखाई दे। हिन्दू और मुसलमानों! होश की दवा करो कलचर मेल जोल की चीज़ है। कलचर तुम्हें अलहदा अलहदा करने की चीज नहीं है। गीता और कुरान दोनों का जिक्र मैंने आपके सामने किया है। हिन्दू ग्रन्थों में "वसुधैव कुटुम्बकम्" कहा गया है। अर्थात् सारा संसार एक कुटुम्ब है। कलाम मजीद की आयत भी साफ है "व मा कानन्नास इल्ला उम्मतुं वाहेदा" यानी सारी मनुष्य जाति एक क़ौम है। हिन्दू और मुसलमान आज कह रहे हैं कि हिन्दू क़ौम अलहदा और मुसलमान क़ौम अलहदा। सच पूछो तो क़ौमें अलहदा नहीं, किस्मतें खराब हैं। शायद अभी इस मुल्क को और बदतर दिन देखना है। मैं किसी को इलज़ाम नहीं देता। एक की गलती सब की गलती है। दुनिया में मैं किसी को छोटा या किसी को बुरा नहीं समझता, मेरे दिल में हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिये एक सी जगह है।

आज की बातचीत खत्म हुई। कल अगर खुदा ने चाहा तो फिर कुछ कहूँगा। दोस्तो! मुल्क की सलामती एक लफ़्ज़

मोहब्बत के अन्दर बन्द है। और मुल्क की बरबादी 'फूट' के अन्दर। इनमें से जो रास्ता चाहते हो वह चुन लो।

इसके बाद तिवारी साहब ने सब को धन्यवाद दिया, मीटिंग की कार्रवाई खत्म हुई।

प्रेम धर्म

पब्लिक मीटिंग सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड लशकर की तरफ़ से जो आर्य समाज मुरार में, तारीख २४ अक्टूबर १६४४ को शाम के ६-३० बजे खानबहादुर सैयद अली हसन साहब इंसपेक्टर जनरल आफ़ पुलिस, गवालियर, की अध्यक्षता में हुई।

पंडित सुन्दर लाल जी—भाइयों! अगर किसी भाई को मेरे दो रोज़ के लशकर के व्याख्यानों पर या किसी और विषय पर शंका समाधान करनी हो या कोई सवाल पूछना हो तो मैं उसके लिये तैयार हूँ।

(पब्लिक की तरफ़ से आवाज़ आई कि आप खुद ही तक़रीर कीजिये जिससे हमको आपके पाक खयालात के सुनने का मौका मिले।)

एक सवाल मुझसे किया गया है। एक नहीं दो भाइयों ने कहा है कि आपने धर्म, संस्कृति, कुरान और गीता का ज़िक्र खूब किया। रियासत के अन्दर यहाँ इन बातों पर कोई झगड़ा नहीं है। हमारा झगड़ा दूसरी चीज़ों पर है। उस पर इन बातों से कोई मदद नहीं मिली। हमारे यहाँ तो ३३ फ़ी सदी या ३१ फ़ी सदी नौकरियों का और ज़बान का सवाल है। मैं इसके बारे में आपसे कुछ मोटी मोटी उसूली चीज़ें अर्ज करूँगा। ज़बान

का सवाल, फीसदी का सवाल, नौकरियों में मुसलमान कितने हैं, मरहठे कितने हैं या ग़ैर मरहठे कितने हैं, इस तफसील में पड़ने से मुझे कोई फायदा नहीं मालूम होता। हर इंसान में कुछ न कुछ कमज़ोरी होती है। हमारे दिल में जो कमज़ोरी होती है वही हम किसी पंच से सुनना चाहते हैं। अगर दूसरे ने हमारी राय के मुताबिक राय देदी तो ठीक है, अगर खिलाफ देदी तो उसकी राय हमें पसंद नहीं आती। अगर ज़बान और परसेन्टेज का सवाल तय करने का अख़्तियार मेरे हाथ में होता तो मैं एक मिनट में उसके लिये तैयार हो जाता। लेकिन मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि असली सवाल फ़िगर्स का नहीं है, २२ या ३३ फी सदी का नहीं है। सवाल तो दिलों का है। असलियत तो यह है कि इस वक्त हम जिस नज़रिये से जिस निगाह से इस चीज़ को देख रहे हैं, वह नज़रिया सिर से पैर तक ग़लत है। अगर हमारा नज़रिया ठीक हो जाय तो चाहे १०० फी सदी मुसलमान हों, चाहे १०० फीसदी हिंदू हों, मरहठे हों या ग़ैर मरहठे हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ सकता। इससे किसी को दुःख या एतराज़ नहीं हो सकता। आपके यहाँ ग्वालियर में मेरी तक़रीरें हो रही हैं। कन्सोलियेटरी बोर्ड एक नीम सरकारी जमात है। इंसपेक्टर जनरल साहब पुलिस जलसों के प्रेसीडेन्ट होकर बैठते हैं। राजनीति में मेरे उनके ख्यालों में फर्क है। फिर भी मैं उनकी इज्जत करता हूँ। मुझे उनसे प्रेम और मोहब्बत है। मेरे या उनके खयालात बदले नहीं हैं। मैं इस मुल्क की आजादी का शैदा हूँ। आजादी के लिये बेचैन हूँ। मेरी खद्दर कह रही है, मेरा १० दफा का जेल जाना कह रहा है कि मैं आज़ादी के लिये कितना बेचैन हूँ। फिर भी मेरे लिये उनके दिल में क़द्र है—कि मेरे जेल जाने पर भी उन्होंने मुझे दावत दी। सवाल एक दूसरे से प्रेम, इन्साफ, और रवादारी का

है। आज हिन्दू कहते हैं कि हुकूमत मुसलमानों के हाथों में न जाय, उधर मुसलमान कहते हैं कि हिन्दुओं के हाथों में न जाय। इसके लिए मेरा एक ही सीधा सा जवाब है। मैं उस हिन्दू को कौमपरस्त या आज़ादी का प्रेमी नहीं मानता जो इस बात के लिये तैयार नहीं कि हुकूमत की बाग ग़ैरों से निकल कर चाहे हिन्दुओं के हाथों में जाय चाहे मुसलमानों के चाहे अछूतों के, लेकिन रहे हिंदुस्तानियों के हाथ में। ऐसे ही मैं उस मुसलमान को कौमपरस्त या आज़ादी का प्रेमी नहीं मानता जो यह सोचे कि हुकूमत चाहे ग़ैरों के हाथ में रहे लेकिन हिंदुओं के पास या अछूतों के पास न जाय। जो इस तरह देखते हैं वह आजादी को नहीं देखते, देश को नहीं देखते, हिंदू, मुसलमान और अछूतों को देख रहे हैं। मैं तो यह चाहता हूँ कि देश की हुकूमत हिंदू मुसलमान, अछूत या किसी भी हिंदुस्तानी के हाथ में आ जावे ग़ैरों की हुकूमत से अच्छी है। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी सब को हमें समानता से देखना चाहिये। हिंदू मुसलमान को और और सब हिंदुस्तानियों को यह सोचना चाहिये कि ताकत चाहे हिन्दू, पारसी मुसलमान या ईसाई किसी के भी हाथ में जावे लेकिन आनी चाहिये किसी हिन्दुस्तानी के ही हाथ में। यह हिन्दुस्तानियत के जज़बात यह भावना अभी हम लोगों में नहीं है। अभी हमारे दिल फटे हुये हैं। मैं जो चीज़ आपके सामने कह रहा हूँ वह यह है कि हमारा मूल रोग राजनैतिक या सियासी नहीं है। फीसदी का सवाल नहीं है। हमारी बीमारी गहरी है। हमारा मूल रोग राम, रहीम, धर्म और मज़हब की हमारी ग़लत कल्पनाओं में है। मैं इस वक्त आप से दिल खोल कर बातें कर रहा हूँ। आपको हिन्दुस्तान में काफी हिन्दू भाई इस तरह के मिलेंगे जिनके दिलों में इस तरह का खयाल है कि अगर यह नौ करोड़ मुसलमान हिन्दुस्तान से चले जावें

तो मुल्क कल आजाद हो जावे। वह यह समझते हैं कि हमारी आजादी में रुकावट मुसलमान ही हैं। मैं यह कहने को तैयार हूँ कि अगर आज मुझे इस बात का यकीन हो जावे कि नौ करोड़ मुसलमानों को रस्सी से बाँध कर बंगाल की खलीज में फेंकने से देश आजाद हो जावेगा तो मैं लिल्लाह उसकी कोशिश करूँगा ताकि तीस करोड़ हिन्दू आजाद होकर आराम से रह सकें। दूसरी तरफ अगर मुझे यकीन हो जावे कि तीस करोड़ हिन्दुओं को रस्सी से बाँध कर बंगाल की खलीज में फेंकने से नौ करोड़ मुसलमान आजाद होकर आराम से रह सकेंगे तो मैं इस के लिये भी तैयार होजाऊँगा। मुझे तीस करोड़ हिन्दू या नौ करोड़ मुसलमानों से कोई ग़रज़ नहीं है। मुझे ग़रज़ सिर्फ़ इस बात से है कि जो भी इस मुल्क में रहे आज़ाद रहे। मगर आप इस हिन्दू मुसलमानों के सवाल को ग़लत समझ रहे हैं। यह हिन्दू या मुसलमानों को अलग करने का सवाल नहीं है। बीमारी हमारे खून में है। इस उंगली या उस उँगली में नहीं। एक उंगली को काटने से जिस्म ठीक हो सकता तो मैं इसके लिये तैयार हो जाता। लेकिन अगर इस देश में ईश्वर की कोई वबा ऐसी फैले कि सारे के सारे मुसलमान मर जायें तो आप देखेंगे कि ब्राह्मण अब्राह्मण के अंदर या राजपूतों और बनियों के अंदर वह झगड़े खड़े होंगे जो हिन्दू मुसलमानों के झगड़ों से कहीं ज्यादा होंगे। ऐसे ही अगर सब हिन्दू खत्म हो जायँ तो कल शिया सुन्नियों के झगड़े हिन्दू मुसलमानों के झगड़ों से बढ़ जायँगे। मैं यहाँ तक कहने को तैयार हूँ कि अगर सब बनिये ठाकुर राजपूत मरहठे और मुसलमान एक रात के अंदर मर जावें और महज़ ब्राह्मण देश में रह जावें तो सरजूपारी और कन्नौजियों में वह जंग चलेगी जो आज तक हिंदू मुसलमानों में नहीं चली। बीमारी हमारे खून के अंदर है। दोस्तों! खून की

सफ़ाई के लिये दवा खानी होगी। उँगली काट फेंकने से काम नहीं चल सकता। न ऊपर की मरहम पट्टी से काम चलेगा। नुक़्स हमारे दिलों और दिमाग़ों में हैं। हम उस अल्लाह से जो सब का ईश्वर है कोसों दूर हो गये हैं। हम ज़रा दुनियाँ पर नज़र डालें। दुनिया के अन्दर इस वक्त दो ताकतें एक दूसरे से टकरा रही हैं। एक तरफ मजहब और इखलाक है और दूसरी तरफ तरह तरह की सियासत, पालिटिक्स इकोनोमिक्स, अर्थशास्त्र आदि हैं, जो मज़हब और इखलाक दोनों को मिटा देने की कोशिश कर रही हैं। दुनिया की समस्याओं का आपकी समस्याएं केवल एक हिस्सा हैं, एक पहलू हैं। दुनिया भर में एक स्ट्रगल, एक कशमकश जारी है। यूरोप आज मजहब और इखलाक को ताक पर रख कर सियासी और एकोनोमिकल बातों से ही दुनिया की मुसीबतों को हल करना चाहता है। जिसका नतीजा आज यूरोप की खौफनाक जंग है। मैं यूरोप वालों की हुकूमत से इतना डरने के लिये तैयार नहीं हूँ। हुकूमत आज जाने वाली है। चार दिन के अंदर जाने वाली है। कोई भी हुकूमत न रही और न रहेगी। अंग्रेज़ी हुकूमत भी नहीं रह सकती। मुझे सबसे ज्यादा डर इस बात का है कि कहीं इस देश के हिन्दू और मुसलमान यूरोप की इस हवा के साथ बह न जावें। मैं ईश्वर, अल्लाह का मानने वाला हूँ। मुझे साफ़ दिखता है कि दुनिया बिना अल्लाह के जिन्दा नहीं रह सकती। अल्लाह के बंदे अल्लाह को ताक पर रख कर सुखी नहीं रह सकते। आपकी और दुनिया की समस्याएँ मज़हब से ही हल हो सकती हैं। आप यह कहेंगे कि हिन्दू और मुसलमान तो काफ़ी मजहबी दिखाई देते हैं। लेकिन आप मजहब के समझने में ग़लती कर रहे हैं। आप मज़हब के नाम पर एक दूसरे का सिर फोड़ने को तैयार रहते हैं। वह मज़हब

जिसमें आपने अपने आपको बाँध रखा है वह ऊपरी रीत रिवाजों और कर्मकांडों का मज़हब है। आपका यह मज़हब मजहब का सच्चा रूप नहीं। मैं धर्म को रियेलिटी उसके असली रूप के बारे में आपसे कुछ कहना चाहता हूँ। अगर आपको जिन्दा रहना है और अगर आपको अपने मजहब को बचाना है तो आपको इस एक दूसरे से नफ़रत के, दिखावे के और केवल कर्मकांड के मज़हब को छोड़ कर उस प्रेम धर्म, उस मज़हबे इश्क़ और उस एक अल्लाह को मानना होगा जो सब का अल्लाह है। कलाम मजीद में इस असली मज़हब के बारे में आयतें पर आयतें भरी पड़ी हैं। "जिन लोगों ने मजहब के टुकड़े टुकड़े कर रखे हैं, ए मोहम्मद! तू उन में से नहीं है।" कह दे उन लोगों से जो यह समझते हैं कि निजात सिर्फ उनके लिये है, जैसे यहूदी समझते हैं कि निजात सिर्फ यहूदियों के लिये है, ईसाई समझते हैं कि निजात सिर्फ ईसाइयों के लिये है, साबी समझते हैं कि निजात सिर्फ उनके ही लिये है, ए मोहम्मद! उन सब से कह दे कि साबी, ईसाई, यहूदी या कोई भी और हो, जो भी एक अल्लाह को माने और नेक काम करे उसे अपने लिये कोई डर नहीं।"

दोस्तों! यह मजहब था जो दुनिया के मजहबों को मिलाने के लिये आया था, और आज आपका मज़हब लड़ने की चीज़ रह गया है। आज मैं आर्य समाज के हाल के नीचे बैठा हुआ हूँ। मुझे उनसे भी खरी खरी बातें कर लेने दो। मैं अपने दिल में कोई बात छिपा कर रखना गुनाह समझता हूँ। मैं मज़हब को जिस तरह देखता हूँ उस मज़हब में और आपके मज़हब में ज़मीन आसमान का फर्क है। मैं आपसे चाह रहा हूँ कि आप ज़रा मज़हब को मेरी निगाह से देखें। हर धर्म मज़हब के दो पहलू होते हैं। एक तो वह है जो मजहब के बुनियादी उसूल होते हैं।

दूसरे उसका रस्म, रिवाज और वह जबान जिसमें उस मजहब की खास किताबें होती हैं। बुनियादी उसूल और दूसरा कर्मकांड, या शरअ और मिनहाज। जहाँ तक मजहब के बुनियादी उसूलों या मूल तत्वों का ताल्लुक है मुझे अलग अलग मजहबों में कोई फर्क नहीं दिखाई देता। मैं उन भाइयों से जो यहाँ खड़े हुए हैं और संस्कृत जानते हैं पूछता हूँ कि वे मुझे कोई भी ऐसा मंत्र दिखा दें जिसमें कर्मकांड को धर्म कहा गया हो, या किसी भी खास भाषा को धर्म की प्रधान भाषा बताया गया हो। चंद रोज की बात है मैं दिल्ली के अरबी कालिज में लेकचर दे रहा था। मैंने जो ख्याल वहाँ जाहिर किया था वही यहाँ भी जाहिर कर रहा हूँ। अरबी कुरान की जबान है। वह अच्छी जबान है। लेकिन किसी दूसरी जबान के मुकाबिले में वह किसी तरह भी ज्यादा पाक जबान नहीं है। एक साहब ने दूर से इसके खिलाफ मुझे आवाज दी और कहा कि आप गलत कह रहे हैं। मैंने कुरान मजीद को लेकर कहा कि मुझे कलाम मजीद के अन्दर कहीं भी यह दिखा दो कि अरबी जबान दूसरी जबानों से ज्यादा पाक है। 'कुरान' अरबी में क्यों उतरा उसकी वजह भी वहाँ लिखी हुई है। कई आयतें ऐसी मौजूद हैं जिनमें इसका जिक्र किया गया है कि कुरान अरबी में क्यों उतरा। लिखा है कि— "कुरान अरबी में इसलिये कहा गया है ताकि इस मरकजी शहर मक्के के लोग, अरब के रहने वाले, आसानी से उसकी बातें समझ सकें।" "कुरान अरबी में इसलिये कहा गया है कि अगर किसी दूसरी जबान में होता तो यह अरब वाले कहते कि यह अजनबी जबान में है, यह क्या बात है जो हमारी जबान में हमें नहीं समझाया गया।" कुरान अरबी में इसलिये उतरा कि वहाँ के लोगों की जबान अरबी थी। यही बात दूसरी धर्म की किताबों के लिये भी कही जा सकती है। वेद संस्कृत में लिखे गए थे। क्योंकि उन दिनों उन लोगों की जबान संस्कृत थी।

लेकिन अरबी हो या संस्कृत, ईश्वर, अल्लाह, की नजरों में कोई जबान किसी दूसरी जबान से ज्यादा पवित्र नहीं है। हिन्दुओं और मुसलमानों! धर्म और मजहब की स्पिरिट को, उसकी रूह को, समझो। जो चीज आदमी को मिलाने वाली थी उसे तुमने फूट की चीज बना रखा है। अगर कोई अरबी में नमाज पढ़ता होता है और उसी वक्त कोई आकर संस्कृत में कुछ कह देता है तो आपकी नमाज क़ज़ा हो जाती है! ऐसे अगर आप वेद मंत्र पढ़ रहे होते हैं, उस वक्त कोई आकर अल्लाहो अकबर कह देता है तो आप उसे अपवित्र समझते हैं। अपने दिलों को चीर कर देखो कि हमारे अन्दर यह हालत है या नहीं। ईश्वर या अल्लाह में कोई फर्क नहीं है। यह दिल की चीज है। दिल के अन्दर इस चीज को जगह देने की जरूरत है। मजहब मिलाने की चीज है, लड़ने और गिरोह-बंदी की चीज नहीं है। मैंने पिछली तीन या चार मर्दुम-शुमारियों में अपने को 'हिन्दू' नहीं लिखाया। मुमकिन है इस चीज को सुन कर मेरे कुछ हिन्दू दोस्तों को बुरा लगे। लाहौर के एक लेकचर में मैंने जब यह बात कही तो दो भाई इसी पर उठ कर चले गए। भाइयों! हिन्दू शब्द वेद में कहीं नहीं मिलेगा। महाभारत में कहीं इस शब्द का जिक्र नहीं आया। यहाँ बहुत से आर्यसमाजी भाई मौजूद हैं, आर्यसमाज के लिटरेचर को उठा कर देखिये। प० लेखराम जी के जमाने के सैकड़ों मजमून और लेकचर आपको मिलेंगे जिनमें उन्होंने अपने आप को हिन्दू कहने से इन्कार किया है। 'आर्य' कहा है। 'हिंदू' के मानी उन्होंने 'चोर' बताए हैं। गुरु नानक ने कहा है—"ना हम हिन्दू न हम मुसलमाँ, दोनों बिच बसै शैतान!" कबीर, नानक, दादू, पलटु, जैसे सैकड़ों हिन्दुस्तानी सन्तों ने अपने को 'हिन्दू' कहने 'मुसलमान' कहने से इंकार किया है

और एक प्रेम धर्म को ही अपना धर्म माना है।

सब धर्मों के बुनियादी उसूल एक हैं। उनके साथ साथ आपकी शरअ और मिनहाज भी चल सकती है पूजा के तरीके भी चल सकते हैं। सन्ध्या भी आप करें, नमाज भी पढ़ें, कोई चीज आपको छोड़ने की जरूरत नहीं। लेकिन हमारे दिलों के अन्दर वसअत होनी चाहिए! संस्कृत और अरबी को हम इस निगाह से देखें जैसे हम में से किसी को भिन्डी अच्छी लगती है तो किसी को करेले का शौक़ होता है। अगर हमारे अंदर यह चीज न होगी और हम संस्कृत को अरबी से या अरबी को संस्कृत से ज्यादा पाक और दूसरी को नापाक समझते रहेंगे तो न यह मुल्क आजाद हो सकता है और न हम सच्चे मजहबी या धर्मात्मा हो सकते हैं। हमारे दिलों में एक दूसरे के लिए जगह होनी चाहिए। चाहे कोई पूरब की तरफ़ मुँह करके पूजा करे और चाहे पच्छिम की तरफ़ मुँह करके नमाज पढ़े। दादू ने कहा है—

> पूरब में राम और पच्छिम में खुदाय है।
> उत्तर और दक्खिन कहा कौन बसता॥
> साहब वह कहाँ है कहाँ फिर नहीं है।
> हिन्दू मुसलमान तूफ़ान करता॥

ईश्वर सब तरफ़ है, उसे चाहे पूरब की तरफ मुँह करके भजो, चाहे पच्छिम की तरफ़ मुँह करके उसका नाम लो, चाहे संस्कृत में उसको पुकारो, चाहे अरबी में उसको याद करो। वह सब को बराबर ही देखता है। उसकी नजर में कोई छोटा या बड़ा नहीं है। तुमने अल्लाह को भी एक जबान मुक़र्रर कर दी है। यह चीज तर्क या दलील की नहीं है। यह तो दिल

की चीज है। बीमारी, दोस्तों ! तुम्हारे और मेरे खून के अन्दर है। बीमारी, खुदी की बीमारी है। खुदी मिटी कि हमारी सारी सियासी मुशकिलात हवा होती दिखलाई देंगी।

जो मुसलमान भाई यहां मौजूद हैं उनसे भी मैं ज़रा खरी खरी बातें करना चाहता हूँ। नमाज़ के मामले में हज़रत मोहम्मद की ज़िन्दगी में तीन साफ़ हिस्से दिखलाई देते हैं। उनके पैग़म्बर होने के बाद करीब तेरह साल तक, जब वे मक्के के अन्दर रहे उस वक्त तक, नमाज के लिए कोई खास दिशा मुकर्रर नहीं थी। बरसों चारों तरफ़ नमाज़ पढ़ी जाती रही। उसके बाद मोहम्मद साहब जब मदीना पहुँचे तो उन्होंने एक सिम्त मुक़र्रर कर ली। वह सिम्त उत्तर की तरफ़ मुक़र्रर हुई। और मक्का मदीने से दक्खिन की तरफ़ है। सोलह महीने तक उत्तर की तरफ़ मुँह करके नमाज पढ़ी जाती रही। अचानक एक दिन मोहम्मद साहब ने दक्खिन की तरफ़ मुँह करके नमाज पढ़ना शुरू किया। लोगों ने पूछा कि हज़रत! नमाज का रुख क्यों बदल दिया ? इसके जवाब में कलाम मजीद में एक आयत आज तक मौजूद है। वह यह है—"पूरब और पच्छिम दोनों अल्लाह के हैं। जिधर भी तुम मुंह कर लो उधर ही अल्लाह का मुंह है।" काबा भी एक पाक जगह है। काबे की तरफ़ मुँह करने में कोई बुराई नहीं, लेकिन सफर में और घोड़े या ऊँट की पीठ पर अब भी सब तरफ़ मुँह करके नमाज पढ़ना जायज है।

मुसलमान पच्छिम की तरफ़ नमाज़ पढ़ते रहें और हिन्दू पूरब की तरफ़ मुँह करके पूजा करते रहें, अल्लाह दोनों को मिलेगा। अल्लाह पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन में या किसी खास कर्म कांडों या भाषा में बँधा हुआ नहीं है। अधिकांश

आर्यसमाजी 'शन्नो देवी' से लेकर 'नमः शम्भवाय च' तक पूरी सन्ध्या पढ़ जाते हैं। वह तोते की तरह रटन्त होती है। मेरे एक दोस्त ने जिन्होंने सारी उम्र कालिज में संस्कृत पढ़ाई है मुझसे कहा कि जब मैं सन्ध्या करने बैठता हूँ उस वक्त अर्थ मेरे सामने नहीं होते, सिर्फ सन्ध्या करनी है यह चीज सामने होती है। मुसलमान लोग अरबी में नमाज पढ़ते हैं। उनमें से ९९ फ़ीसदी को तो उसके माने मालूम भी नहीं होते। एक फ़ीसदी जिनको माने मालूम होते हैं वे भी उस वक्त जैसे तैसे उन आयतों को पढ जाते हैं। अगर कोई हिन्दी या उर्दू में माने याद कर लेता है, और फिर अपनी जबान में ही नमाज पढ़ता है तो उसकी बुराई क्यों करते हो? मोहम्मद साहब की जिन्दगी की मुस्तनद हदीसें मौजूद हैं, जिनमें उन्होंने ईरानियों को ईरानी जबान में और यूनानियों को यूनानी जबान में नमाज पढ़ने की इजाजत दी थी। मोहम्मद साहब किसी गिरोहबन्दी के लिए नहीं आये थे। वह आजकल की सी तंज़ीम या तबलीग़ करने नहीं आये थे। दस हज़ार मुसलमान एक जगह जमा होकर मुसलमानों की तंज़ीम की दुहाई देते हैं और बीस हजार हिन्दू दूसरी जगह जमा होकर हिंदू संगठन की दुहाई देते हैं। यह क्या चीज है? ज़रा शांति और ईमानदारी से देखो, तुम्हें इन दोनों गिरोहों के कैरेक्टर उनके चरित्र की ऊँचाई निचाई में कोई खास फ़र्क़ दिखाई देता है?

मेरे सामने जब कोई इसलाम को बचाने या हिन्दू धर्म की हिफ़ाजत करने का जिक्र करता है तो मुझे अफ़सोस होता है कि आज आपका धर्म या मजहब जनेऊ, दाढ़ी, चोटी और खतने में रह गया है। आप सरकारी रिपोर्टों को उठा कर देखें, जिना या व्यभिचार के मामले में हिन्दू ज्यादा फँसते हैं या मुलसमान।

हिन्दू लोग ज्यादा रिश्वत लेते हैं या मुसलमान ? अगर मामूली इखलाक़ मुझे मुसलमानों में ज्यादा ऊँचा दिखलाई देता तो मैं आज अपना नाम बदल कर मोहम्मद याकूब रख लेता। लेकिन इन मामलों में न हिन्दू मुसलमानों से पीछे हैं, न मुसलमान हिन्दुओं से पीछे। ब्राह्मणों को ही मैं क्या कहूँ ? मैंने नौ दस बार जेल देखा है। मेरी जेल की कोठरी के फाटक जगह जगह गंगानाथ दूबे और रामकिशोर तिवारी ने बंद किए हैं। मैं कैसे किसी एक से दूसरे को अच्छा मानूँ। नाम बदल लेने से कोई आदमी अच्छा या बुरा नहीं हो जाता। मेरी समझ में कोई तहरीक इतनी ग़लत और मुल्क के लिए हानिकर नहीं चली जितनी शुद्धि और तबलीग़ की तहरीकें थीं। उसी का नतीजा इस फूट की शक्ल में आप देख रहे हैं। मैं आपकी बीमारी की जड़ में जाना चाहता हूँ। जरा ग़ौर से सोचो कि कहाँ जा रहे हो। तुम किस चीज में फँसे हुए हो।

सं० १९४२ का जिक्र है जब दिल्ली के अन्दर शुद्धि की तहरीक चल रही थी। मैं और मेरे दोस्त शंकरलाल एक ताँगे में बैठ कर दिल्ली के स्टेशन से कुइन्स गार्डन की तरफ जो सड़क जाती है उस पर जा रहे थे। सुबह १०-११ बजे का वक्त था दिल्ली में हिन्दू मुस्लीम रायट होकर ही चुका था। सड़क के किनारे १०-१२ बरस का एक लड़का रोता चिल्लाता दिखाई दिया। हम ताँगे को रोक कर उस लड़के के नजदीक गए। उस लड़के ने रोकर हमसे कहा कि—"मैं गवालियर के पास के एक गाँव का रहने वाला एक ब्राह्मण का लड़का हूँ। मुझे मेरे गाँव से एक मुसलमान पकड़ कर ले आया। कई दिन तक अपने पास रखा। मुझे मुसलमान कर लिया और अब मुझे छोड़ कर न जाने कहाँ चला गया है। मैं भूकों मर रहा हूँ" मुझे अपनी आजाद खयाली पर बड़ा घमंड था। लेकिन

यह देखकर मुझे भी गुस्सा आ गया। मैंने सोचा, १०:१२ बरस का लड़का, इसे कोई क्यों बहका कर लाया। मैं उस बच्चे को प्यार के साथ ताँगे में बैठा कर घर लाया। घर जाकर उसको स्नान कराया और उसे कपड़े बदलवाये। तीसरे पहर अपने एक आर्य समाजी दोस्त के घर ले गया। मैंने कहा कि इस लड़के को शुद्ध करके गवालियर उसके बाप के पास पहुँचा दो। मैं फिर चला आया। क़रीब १५ दिन के बाद एक दिन मैं और वहाँ शंकरलाल जामा मस्जिद के पास से गुजर रहे थे, जहाँ अब गुदड़ी बाजार है। थोड़े ही फ़ासले पर ऐसा मालूम पड़ा कि वही लड़का है। मैंने शंकरलाल से कहा कि वह तो वही लड़का मालूम पड़ता है। इस लड़के के हाथ में कबाब का दोना था। हमने पास जाकर देखा तो वही लड़का निकला। जब उसने हमें देखा तो कबाब का दोना छुपाते हुए वह फिर रोने लगा और कहा कि, "वही मुसलमान मुझे फिर पकड़ लाया था!"

आर्य-समाजी दोस्तों और मुसलमान दोस्तों! मुझे मालूम है कि जूता कहाँ काटता है। मुझे मालूम है कि उन दिनों आगरे, मुरादाबाद और दिल्ली के आस पास २५० से उपर बच्चे ऐसे थे जो १५ दिन हिन्दू और पन्द्रह दिन मुसलमान रहते थे। १५ दिन खीर पूरी और १५ दिन कोरमा उड़ाते थे, और दोनों को उल्लू बनाते थे। हमने अपनी हिमाकत में यह समझ रखा था कि हम मोहम्मद अली को रामनाथ और रामनाथ को मोहम्मद अली बना कर हिन्दू धर्म और इसलाम को ऊँचा कर रहे हैं। बहुत से एजन्ट लोग दोनों तरफ से इस तरह के नाम बदलवा कर इनाम मारते थे। क्या यह मज़हब का मजाक नहीं था? इसलाम दुनिया में उस वक्त फैला था जब किसी एक मुसलमान फकीर की पाक जिन्दगी को देखकर लोग ख़ुद

आकर उससे कहते थे कि हमें मुसलमान बना लीजे। फ़क़ीर जवाब देता था "जा एक अल्लाह को मान और नेक काम कर तू मुसलमान है। नाम बदल कर क्या करेगा।" आज जो लोग सच्ची इसलामी जिन्दगी से कोसों दूर हैं वह भी मुसलीम तंज़ीम करने का दावा करते हैं। एक वह दिन था जब एक कोने में एक फ़क़ीर आकर बैठ जाता था। लाखों हिन्दू और मुसलमान उसके क़दमों पर अपना सिर रखते थे। उसके कैरेक्टर, उसके नेक चलन को देख कर उसकी तरफ़ खिंच आते थे। वह सचचाई और नेकी की एक मिसाल होता था। लोग आकर कहते थे, "शाह साहब! हमें इजाज़त दीजिए हम मुसलमान होना चाहते हैं।" शाह साहब कहते थे—"सच बोलो और ईमानदारी से रहो जो ऐसा करते हैं वे सब मुसलमान ही हैं।" उसी वक़्त इसलाम दुनिया में फैला और फला फूला था। वैदिक धर्म भी उस जमाने में ही सब से ऊँचा था जिस जमाने में हमारे उदार हृदय ऋषि मुनि हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्" की शिक्षा देते थे और हम उस शिक्षा पर अमल करते थे। वसुधैव कुटुम्बकम् का मतलब है कि सारी धरती के सब आदमी एक कुटुम्ब हैं—यही अर्थ कुरान की इस आयत का है—"कानन्नास उम्मतुं वाहेदा" —यानी सारी मनुष्य जाति के सब इनसान एक क़ौम हैं। आज कल का हमारा धर्म, मजहब गुटबंदी के सिवा और कुछ नहीं रह गया है। कोई कहता है हमें १६ फीसदी सीट चाहिये। कोई कहता है हमें २५ फीसदी चाहिए। क़ुरान की एक आयत है—"जो जानवर क़ुरबान किया जाता है, उसका खून अल्लाह को नहीं पहुँचता, दिल की पकी ही अल्लाह तक पहुँचती है।" दोस्तों! हवन में छँटाक भर घी खर्च कर देने से न किसी भूखे का पेट भरता है, न ईश्वर प्रसन्न होता है। धर्म ऐसी छोटी चीज नहीं है। मजहब दिल की सफाई, सच्चाई, ईमानदारी

और सब से प्रेम करने का नाम है। ईश्वर इसी से प्रसन्न होता है। थोड़े से पढ़े लिखे बाबू लोगों ने लीडरी के नशे में आकर लाखों हिन्दू और मुसलमानों को सच्चे रास्ते से भटका रखा है। १५ फीसदी और २५ फ़ीसदी सिर्फ थोड़े से धनी लोगों या पढ़े लिखे लोगों के लिये ही है। नंगे और भूखे हिन्दुस्तानी किसानों को न नौकरी करना है और न सीटों से मतलब है। इन बेचारों की ज़िन्दगी को क्यों बरबाद कर रहे हो ? इन छोटा छोटी बातों के लिए हमारे यह आपसी झगड़े और हमारा धर्म मज़हब का ग़लत तखय्युल ही हमारी ज़िन्दगी को बरबाद कर रहा है। इंसान आखिर इंसान है। कोई इंसान ग़लती से खाली पैदा नहीं हुआ। कुरान में साफ लिखा है—"मोहम्मद तुम्हारी ही तरह एक इंसान है। तुम्हारी तरह इन्सान के सिवा और वह कुछ नहीं है। सिर्फ अल्लाह ने तुम में से ही एक को इस काम के लिए चुन लिया है कि जो सच्चाई अल्लाह तुम्हारे पास पहुँचाना चाहता है वह उसके ज़रिये पहुँचावे।" "अल्लाह ने तुम में से ही एक आदमी चुन लिया है कि तुम जो ग़लत रास्ते पर भटक रहे थे वह तुम्हें सीधा रास्ता बतला दे।" वह पहाड़ी अभी तक मौजूद है जहाँ मोहम्मद साहब अल्लाह से अपनी ग़लतियों की माफ़ी माँगा करते थे। दुनिया में कोई इनसान बहैसियत इन्सान के ग़लती से खाली नहीं हुआ, न हो सकता है। मोहम्मद साहब ने दुनिया में एक ज़बरदस्त मज़हब क़ायम किया। वह रोशनी उन्हें सब के अल्लाह से मिली थी। वह हम तुम सब से करोड़ों गुना ऊँचे थे। अल्लाह के सच्चे बंदे थे! लेकिन हर मज़हबी किताब में साफ़ कहा गया है कि किसी भी एक आदमी, एक गिरोह या एक किताब ने धर्म, मज़हब का ठेका नहीं ले रखा। किसी भी धर्म के सच्चे जानने वाले में कट्टरता नहीं रह सकती।

लाहौर में मैं जब पढ़ता था वहाँ एक लाला गोकुलचंद
र्य समाज का लेक्चर दिया करते थे। वे एक दिन स्टूल
खड़े होकर वेद के महत्व पर लेक्चर दे रहे थे। उस वक्त
की उमर ५०-५५ साल की रही होगी। किसी ने पूछा 'पंडित
! वेद के ऊपर लेक्चर दे रहे हो वेद पढ़ा भी है?' बात
ा सी थी, लेकिन लग गई। संस्कृत तो क्या वह हिन्दी भी
ीं जानते थे। दिल के सच्चे थे, जरा सोच कर स्टूल से नीचे
गये। कहा, 'तू सच कहता है। आज के बाद जब तक
: नहीं पढ़ लूँगा तब तक लेक्चर नहीं दूँगा।' एक एक
डत के पास वेद पढ़ने के लिए पहुँचे। आर्य समाजी पंडितों
मजाक उड़ा कर छोड़ दिया। मोरी दरवाजे के बाहर एक
ातनी पंडित रहते थे। उनसे कुछ लघु कौमुदी पढ़ी। फिर
कुलचन्द जी बनारस गए। इसके बाद बरसों तक मेरी उनसे
ाक़ात नहीं हुई। शायद सन् १९२० के क़रीब मैं बनारस
ा। वहाँ लाहौर के पुराने गोकुलचन्द जी से मुलाक़ात हुई।
व वह बीस बरस की मेहनत के बाद वेदों के पूरे पंडित थे।
हने लगे—"सुन्दरलाल! अब मेरी पूरी तसल्ली हो गई है।
ारों वेद देखे हैं, ऋग्वेद को खूब अच्छी तरह पढ़ा है। लेकिन
व मैं उस तरह का आर्य समाजी नहीं रह गया हूँ जो बीस
:स पहले था!"

दोस्तो! यह सब झगड़े बेसमझी के झगड़े हैं। मैं न
पने को हिन्दू कहता हूँ न मुसलमान, न पारसी, न ईसाई। मुझे
वर और अल्लाह में को फ़र्क दिखाई नहीं देता।

तू हि बता दे ज़ाहिद! क्या कहूँ मैं अपने को,
तू कहे गब्र मुझे, गब्र मुसलमाँ मुझको!

ईश्वर और अल्लाह दो नहीं हैं। तुम्हारा और उनका
ल्लाह दो नहीं हैं। अल्लाह की नजर में सब नाम पाक नाम

हैं, चाहे वह किसी ज़बान का हो। कनछेदन या खतने से दाढ़ी या चोटी से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। हमें दुनिया के अन्दर मज़हब को ज़िन्दा रखना है। आज नास्तिक यूरोप को सच्चे मज़हब की ज़रूरत है। तुममें यह ताक़त है कि यूरोप को फिर से ईश्वर, अल्लाह क़दमों पर लाकर डाल दो। लेकिन इसके पहले अपनी आँखें तो खोलो! जिस वक्त तुम अपने आजकल के मज़हबों को लिए हुए यह दावा करते हो कि यूरोप के अन्दर वेद का झंडा फहरायेगा, लन्दन के अन्दर इसलाम का झंडा फहरायेगा, तो मुझे हैरत होती है। मैं मानता हूँ कि तुममें वह ताक़त है कि वेदों के मज़हब को दुनिया का मज़हब बना सकते हो। इसलाम को दुनिया का मज़हब बना सकते हो। लेकिन आज तो तुम खुद असली मज़हब से कोसों दूर हो। आज का वैदिक धर्म ईशोपनिषद से कोसों दूर है। आज का तुम्हारा इसलाम भी कुरान का इसलाम नहीं है। तुम्हें किसी को अल्लाह नहीं नज़र आ रहा है। इस वक्त तो यह हालत हो गई है कि अगर हमारा कोई १२ बरस का बच्चा कहीं नमस्ते के बजाय आदाब अर्ज़ कह देता है या कहीं से तुम्हारा बच्चा नमस्ते सुन आता है और तस्लीम के बजाय नमस्ते कह देता है तो तुम्हारा मज़हब खतरे में पड़ जाता है।

इसी तरह हिन्दी और उर्दू का झगड़ा है। ज़बानें हमेशा बदलती रहती हैं! संस्कृत को ही लीजिए। ऋग्वेद की शुरू ऋचाओं के अर्थ कोई भी पंडित आजकल के व्याकरण से नहीं कर सकता। ज़माना बदलता है, और बदलता रहेगा। जो संस्कृत पहले बोली जाती थी वह अब नहीं रही। अल्लाह मेरा गवाह है मैं दिल से चाहता हूँ कि हिन्दू और मुसलमान सच्चाई के साथ अपने अपने और एक दूसरे के धर्म को देखें और समझें, फिर कोई झगड़ा नहीं रह सकता। अगर मेरी

लाश के ऊपर से हिन्दू मुसलिम एकता को इमारत की बुनियादें ऊँची हो सकें तो यह मेरे लिए बड़े फ़ख्र की बात होगी। दोस्तों! वह दिन हमारे लिए बड़े फ़ख्र का दिन होगा जब हम यूरोप के लोगों को रूस के लोगों को जाकर धर्म, मज़हब सिखायेंगे। लेकिन यह तब ही होगा जब हमारा मज़हब प्रेम और सुलह की चीज़ होगी। आजकल की तरह लड़ाई झगड़े की नहीं। आज तुम दाढ़ी, चोटी, अरबी, संस्कृत और हिन्दी, उर्दू के झगड़ों में फँसे हुए हो। तुम्हें आज यह नहीं मालूम कि किसका डंडा है जो तुम्हारे दोनों के सिर पर घूम रहा है। एक तीसरे का जादू है जो तुम्हारे सिरों पर चढ़ कर बोल रहा है!

देश में इस तरह के बड़े बड़े ताल्लुकेदार मौजूद हैं जिन्होंने हिन्दू संगठन के बड़े बड़े नेताओं को अपने यहाँ बुला कर १०, १०, २०, २० हज़ार के चेक उनको भेंट किए। जिन्होंने बिना लाट साहब के इशारे के कभी किसी को एक पैसा नहीं दिया था, और जिनकी कोठियों में मेज़ पर सब तरह का गोश्त परसा जाता था। ठीक इसी तरह मैंने वे चेक भी देखे हैं जिनके ज़रिये से मुसलिम तंज़ीम के झण्डों के दाम दिए गए थे। मज़हब के नाम पर झगड़े और अल्लाह के नाम पर झगड़े, यह चीज़ क्या है? इसे समझने की कोशिश करो! पोलीटिकल परसेन्टेज और अल्लाह! पालीटिकल परसेन्टेज और मज़हब! हमारी हालत यह है कि केक, बिस्कुट, सोडा, इन सबसे हमारी हिन्दू या मुसलिम संस्कृति नहीं बिगड़ती! अँगरेज़ी संस्कृति को हम बचाने की कोशिश करते हैं, और हिन्दू या मुसलमान संस्कृति से बचने की कोशिश करते हैं। अच्छे से अच्छे हिन्दू और मुसलिम संस्कृति के नेताओं को गर्दन से नीचे की फ़ोटो लीजिए दोनों बिलकुल अँगरेज़ मालूम पड़ेंगे। दोस्तों! चाहे

कुछ भी पहनो उस से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, सिर्फ हमारे दिलों में एक दूसरे के लिए जगह होनी चाहिए। मुझे अपने बचपन के दिल्ली के वे दिन याद हैं जब हकीम महमूद ज़िन्दा थे। उनकी बात को सब मानते थे। अलीगढ़ के कालिज से पढ़ कर कोई लड़का दिल्ली आया! वह टर्किश कैप पहिने था। दिल्ली में शायद वह पहली तुर्की टोपी थी। महमूद शहर में घोड़े पर घूमा करते थे। एक दिन वह घोड़े पर जा रहे थे। उन्हें वह लड़का लाल टोपी पहिने नज़र आया। हकीम महमूद ने उसे बुलाया और पूछा कि वह किस का लड़का है। उसके बाप को बुलाकर हकीम महमूद ने कहा कि "यह लाल आग मुझे दिल्ली के अन्दर नहीं चाहिए! यहाँ तो भाई कन्हैयालाल भी दुपल्ली टोपी ओढ़ते हैं, और मैं भी दुपल्ली ओढ़ता हूँ।" दोस्तो! तुमने अल्लाह और मज़हब को टोपी, धोती, और पायजामों में कहाँ फँसाया! कोट पतलून पहिनने में, चाय और बिस्कुट उड़ाने में हमारा धर्म या दीन नहीं बिगड़ता, लेकिन एक दूसरे की पोशाक में बिगड़ता है। पंजाब में जाकर देखो हिन्दू और मुसलमान सब लड़कियाँ सलवार पहिनती हैं। लेकिन यू० पी० में लड़कियों के एक कालिज के प्रिन्सिपल ने जब सलवार को सब लड़कियों की यूनीफ़ार्म क़रार देना चाहा तो चारों तरफ़ से आवाज़ें उठने लगीं कि हिन्दू संस्कृति को जान बूझकर नाश किया जा रहा है।

शिवाजी और औरंगज़ेब एक दूसरे से लड़े। लेकिन शिवाजी औरंगज़ेब की पोशाक में क्या फ़र्क़ था? वही पगड़ी दोनों के सिरों पर, वही कुरता अँगरखा दोनों के बदन पर और वही पाजामा दोनों की टाँगों में। कुछ लोगों ने १० : ५ उलटे सीधे फ़ारमूले याद कर रखे हैं और कहते हैं कि हिन्दू मुसलमानों के साथ मेल कैसे हो सकता है? अगर हम सादे लोटे से हाथ धोते हैं तो वह टूँटीदार लोटे से, अगर हम सीधे तवे पर रोटी

पकाते हैं तो वे उलटे तवे पर, हम शान्ति के साथ बैठ कर पूजा करते हैं तो वे अज़ान देते हैं, हम पूरब को मुँह करते हैं तो वह पच्छिम को..। मैं पूजा या नमाज़ किसी को ग़लत नहीं बता रहा हूँ। ईश्वर को इस तरह याद करो, चाहे उस तरह। लेकिन जब इन चीज़ों को मज़हब के साथ इस तरह जोड़ा जाता है तो हमें अपनी हिमाक़त पर तरस आता है। किसी भी पेड़ को उसके फल से देखो, नतीजा क्या होता है इस बात को देखो। आज चार चार करोड़ की आबादी वाले देश दुनिया की क़िस्मत का फ़ैसला कर रहे हैं, और हम ४० करोड़ इन्सान के बच्चे अपनी किस्मत भी अपने हाथ में नहीं रख सकते। महज़ गांधी, जिन्ना के मिल जाने से काम नहीं चलेगा। मेरी निगाह उस तरफ़ नहीं है। "धर्मो रक्षति रक्षितः" तुम धर्म की रक्षा करो वह तुम्हारी रक्षा करेगा। असली सवाल सियासी या राजनैतिक नहीं है। सच्चा धर्म क़ुरान या गीता के अन्दर बन्द रखने की चीज़ नहीं है। ईश्वर का बताया रास्ता सब के कल्याण का रास्ता है। वह एक ही रास्ता है। तुम इस रास्ते से कोसों दूर भटक रहे हो। हमारे दिलों के अन्दर शैतान ने घर कर लिया है। वेद के ज़माने और महाभारत के ज़माने का पहनावा क्या था? मुझे मालूम है। उस ज़माने की पोशाक पहिन कर अगर कोई आज किसी गली में जावे तो सचमुच लड़के तालियाँ बजा बजाकर पीछे लग जावेंगे। हदीसों के अन्दर साफ़ लिखा हुआ है कि मोहम्मद साहब कैसी पोशाक पहिना करते थे। मैंने किसी मौलवी को भी वैसी पोशाक नहीं पहनते देखा। दोस्तो! तुम एक देश के हिन्दू और मुसलमानों का रहन सहन पौशाक अलग अलग करने की सोच रहे हो। मैं कहता हूँ कि तुम अङ्गरेज़ी रहन सहन और पौशाक को भी कभी पूरी तरह नहीं छोड़ सकते। क्या रेल मे नहीं बैठोगे? मोटरों में सैर नहीं

करोगे ? शेख के आगे भी मिस्टर लगाने में .खुश होगे। सैयद के सामने भी मिस्टर लगेगा। नहीं छूटेगी अङ्गरेज़ी ज़बान भी। दुनिया एक है। अल्लाह की नज़रों में टुकड़े नहीं हैं! टुकड़े हमारी नज़रों में हैं! अल्लाह की नज़रों में जो .गुलामी के मुस्तहक़ हैं उनको .गुलामी और जो आज़ादी के मुस्तहक़ हैं उनको आज़ादी मिलेगी। हम दूसरे के नुक्स निकालने में लगे रहते हैं। हमें अपनी आँखों का लट्ठा भी दिखाई नहीं देता। आज हम एक मुल्क के अन्दर एक दूसरे से अलाहदा अलाहदा हो रहे हैं। वह दिन दूर नहीं गया जब हम एक दूसरे से प्यार करते थे। और मोहब्बत से एक दूसरे को 'चचा' 'ताया' कहा करते थे। मज़हब आज एक दूसरे में प्रेम की चीज़ नहीं रह गया है! महारानी लक्ष्मी बाई की ताज़ा मिसाल हमारे सामने मौजूद है। वह हरे झण्डे को लेकर आज़ादी की जंग में कूदी थी। वह हरा झण्डा जो दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह का झण्डा था। यही झण्डा नाना साहब के हाथ में था। चार दिन पहिले तक हम दोनों में मेल मिलाप था। ३१ : ३३ फ़ीसदी का सवाल और ज़बान का सवाल .खुद ब .खुद हल हो जावेगा। सवाल दिलों का है; दिलों को नज़दीक लाने की ज़रूरत है। अल्लाह के नज़दीक सब मज़हब एक हैं। विष्णु सहस्रनाम के अनुसार विष्णु के हज़ार नाम ही नहीं हैं, सब नाम विष्णु के ही नाम हैं। उसके नाम अनन्त हैं। अल्लाह और रब भी उसी के नाम हैं। मैंने कल कहा था कि अल्लाह अरबी में इलाह से बना है। ऋग्वेद में इला ईश्वर को कहा गया है। संस्कृत के अन्दर इल धातु है। "अग्निमीले पुरोहितम्" इला यानी जिसकी पूजा स्तुति की जावे। रब के लिए भी ऋग्वेद में 'रै' शब्द आया है ज़रा दिल चाहिए, राम और रहीम सब एक हैं।

इलाहाबाद में जब विलायती कपड़ों पर सील लगाई जा

रही थी तो हिन्दू दुकानदारों ने कहा कि अगर आपने कांग्रेस की मुहर लगा दी तो कपड़े के ज़ब्त हो जाने का डर है। उसके बजाय 'राम नाम' की मुहर लगा दीजिए। इसी तरह मुसलमानों ने कहा कि 'अल्लाह' नाम की मुहर लगा दीजिए। मैंने एक मोहर बनाई मुसलमानों को दिखाई उन्होंने पढ़ा 'अल्लाह'। हिन्दुओं को दिखाया उन्होंने उसी को 'ओ३म्' पढ़ा। आप इसे समझेंगे तो आपको मालूम होगा कि उर्दू में 'अल्लाह' और हिन्दी में 'ओ३म्' के लिखने में बहुत ज्यादा फ़र्क नहीं है। अगर आप देखोगे तो किसी मजहब में आपको खास फ़र्क नहीं मालूम पड़ेगा। जो बात अच्छी है जहाँ भी हो अच्छी है। उसे वहाँ से ले लेने में कोई बुराई नहीं है। दुनिया एक है। और जिन्दगी एक समुद्र की तरह यहाँ से वहाँ तक लहलहा रही है और उसी में हम सब तैरते हैं। सिवाय उस परवरदिगार के कोई नहीं जानता कि हम कहाँ जावेंगे। क़ुरान जो हुक्म देता है वही गीता भी हमें बतलाती है। भलाई हमारी इसी में है कि हम एक दूसरे से मुहब्बत करें। एक अल्लाह के अन्दर सबको देखें और सबके अन्दर उस एक अल्लाह को देखें। मैं उपनिषद् के शब्दों का लफ़्ज़ी तर्जुमा कर रहा हूँ। इसी के अन्दर हमारी भलाई है।

नौजवानो! हिन्दुस्तान का कल्याण हमारे हाथ में है। सबसे मोहब्बत करके देखो, उसमें कितनी ताकत है। तुम मुकाबले में दुनिया को जीत लोगे। अल्लाह करे इस मुल्क के रहनेवाले एक मर्तबा फिर एक स्वर से बोल सकें! अगर तुम यह नहीं कर सके तो सिवाय इसके कि तुम दुनिया की ठोकरें खाओ कुछ नहीं हो सकता। दुनिया तुम्हारा इन्तज़ार नहीं

करेगी। अल्लाह हमें तौफ़ीक़ अता करे कि हम इस चीज़ को समझें !

इसके बाद हज़रत जी ने एक शेर पढ़कर सुनाया और मीटिङ्ग की कार्यवाही खत्म हुई।

———

मज़दूर भाइयों से—

मीटिङ्ग कान्सीलियेटरी बोर्ड लश्कर की तरफ़ से पंडित सुन्दरलालजी का भाषण होने के लिए, मुक़ाम हज़ीरा का मैदान, ग्वालियर तारीख २५-१०-४४ समय ६॥ बजे शाम. सभापति ख़ान बहादुर सैयद अलीहसन साहब।

पंडित सुन्दरलाल जी—सदर साहब, भाइयों और बच्चों ! आपके शहर में इस मरतबा मुझे पाँच छै दिन हो गए। इसमें पहिले मैं तीन जगह बोल भी चुका हूँ। और जगह आने वाले लोगों और यहाँ इकट्ठा होने वाले लोगों में मुझे साफ फरक दिखाई दे रहा है। फ़रक़ दो चीजों का है, और उन दोनों बातों में मैं आज के जलसे को मुबारक और फ़ख्र की चीज़ समझता हूँ। पहिला यह कि आज मैं एक सच्चे फ़कीर, एक पुराने पीर की दरगाह के साये में बैठा हुआ हूँ। दूसरे यह कि आज मेरे सामने ज्यादातर मज़दूर भाई दिखाई दे रहे हैं जो सच्ची हिन्दुस्तानी क़ौम हैं। हिन्दुस्तान के शहरों में रहने वाले लोग हिन्दुस्तान के सच्चे प्रतिनिधि नहीं हैं। सच्चे प्रतिनिधि वे लोग हैं जो मज़दूर कहलाते हैं। हिन्दुस्तान एक ग़रीब देश है। हिन्दुस्तान की असली आबादी वह नहीं जो बँगलों के अन्दर रहती है। बल्कि वह है जो झोंपड़ियों में रहती है, जहाँ कि बेन्टीलेटर नहीं होते। उनको बन्द हवा में ही रहना पड़ता है। जिन्हें अच्छे अच्छे कपड़े भी पहनने को नहीं मिलते। इसलिए

में अपने देश के नुमायन्दे उन्हीं भाइयों को और उनमें भी खासतौर से मजदूर लोगों को समझता हूँ। इसलिए मैं यहाँ बैठे हुए सब भाइयों को अदब के साथ नमस्कार करके थोड़े से में अपने विचार प्रकट करूँगा।

भाइयों! आप लोगों ने बहुत अच्छी तरह सुन तो रखा ही है, और कुछ ने पढ़ भी रखा होगा—कि दुनिया के अंदर एक ज़बरदस्त आफ़त मची हुई है। यूराप भर में एक बड़ी जंग हो रही है। इस जंग को धीरे धीरे पाँच साल से ऊपर हो गए और सारी ज़मीन के ऊपर, सारी दुनिया में, यह जंग धीरे धीरे फैलती जा रही है। दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं बचा जिसमें इस लड़ाई के बादल न पहुँचे हों। जो लोग लड़ाई से बाहर हैं उनके ऊपर भी गहरा असर पड़ा है। आपकी देशी रियासतों में इसका असर ज्यादा मालूम नहीं पड़ता। लेकिन उस असर से बचे आप भी नहीं हैं। आप अपने पास के शहर आगरे को ही देखें तो आपको मालूम होगा कि अपने देश के ऊपर इसका कैसा असर है। अगर आप इससे पहले का इतिहास उठाकर देखें तो आपको मालूम होगा कि तीन चार सेर का गेहूँ पहले कभी नहीं बिका था, और चीजों का तो जिक्र ही क्या। जो भाई खासकर ब्रिटिश इन्डिया के अन्दर तनख्वाहों पर अपने कुनबे पाल रहे हैं वे बेचारे अपने बाल बच्चों को पेट भर अन्न नहीं दे सकते। वह जानते हैं कि यह असर लड़ाई का है। यह असर सारी दुनिया के ऊपर फैला हुआ है। भूक और तरह तरह की बीमारियों के बारे में भी आपने सुना होगा। इस भूक और बीमारी के कारण पूर्वी बंगाल में लाखों जानें चली गईं। ५० लाख से ऊपर लोग भूक से प्राण दे चुके हैं। और जो बचे हैं वे मरों से बदतर हैं। कालेरा इनफ़लुएन्ज़ा पेचिश वग़ैरा बीमारियों से मरे हुए लोगों की रिपोर्टों से

थैले भरे पड़े हैं! लाखों नहीं करोड़ों आदमी आज अपने देश में इन बीमारियों में फँसे हुए हैं। इस जंग की वजह से लोग आफ़त में फँस रहे हैं। यह आफ़त हमारे ही मुल्क के ऊपर हो ऐसा नहीं है। यह यूरोप के मुल्कों के ऊपर भी है। वह यूरोप के देश जो तिजारत के जरिये हमारा खून चूस चूस कर मोटे हुए थे आज उनकी हालत हमसे भी कहीं बदतर है। आपको इंग्लैंड के बारे में भी मालूम होगा कि जो लोग पाँच साल पहले मक्खन में लोट सकते थे उनके बच्चों को आज महीनों तक दूध भी पीने को नहीं मिलता। यही हालत बाकी यूरोप की है।

मेरे दोस्तों, और मज़दूर भाइयों! मैं आपके सामने इस बात को रखना चाहता हूँ कि आपकी यह हालत क्यों हो रही है, और दुनिया की यह हालत क्यों है, मुझे जो कारण मालूम होता है उसे आपके सामने रखना चाहता हूँ। सलतनतों की लड़ाई तो ऊपरी लड़ाई है। आपको मालूम होता है कि अंग्रेज, जर्मनी, रूस अमरिका और जापान लड़ रहे हैं। इन ताक़तों को जाने दीजिये। असली लड़ाई आदमियों या कौमों की नहीं हुआ करती। लड़ाई असली विचारों या ख्यालों की होती है, असली लड़ाई दिमाग़ों की होती है। आप मेरी बात को समझने की कोशिश करें। दुनिया में दो तरह के ख्यालात और आदर्श एक दूसरे के साथ ज़ोरों से टक्कर ले रहे हैं। असली लड़ाई इनकी लड़ाई है। यह जो आपको ऊपर से दिखाई देता है उसका बाहरी रूप है। आत्मा• असली चीज़ है, शरीर उसकी शोभा की चीज़ है। इस दुनिया में दो तरह के लोगों में खींचातानी हो रही है। एक तो वह लोग जो अल्लाह को, धर्म को, दीन और मज़हब को ताक पर रखकर महज अपनी जिस्मानी ज़रूरतों, वासनाओं को सामने रखकर अपने शरीर की ज़रूरतों को पूरा करना चाहते हैं। दूसरे

वह लोग हैं जो धर्म मजहब पर चलते हैं और ईश्वर के ऊपर एतकाद रखते हैं। इनमें दूसरे वह हैं जो न्याय और सदाचार पर चलना चाहते हैं। और पहले वह हैं जो न्याय अन्याय की, सदाचार दुराचार की खाक परवा नहीं करते। एक इन्सानियत का सहारा लेते हैं तो दूसरे हैवानियत का। यह बिजली के पंखों के नीचे अच्छे अच्छे पलँगों पर बैठना ही अपना आदर्श समझते हैं। उनमें दूसरी कौमों का कोई ख्याल नहीं होता। वह दूसरी कौमों के लोगों को अलग रखकर, ईश्वर और मजहब को लात मार कर, मजहब को सिर्फ पागलों की चीज बता कर, महज अपनी, ज्यादा से ज्यादा अपने देश वालों की, जिस्मानी जरूरतों को ही देखते हैं। दीन को लात मार कर वह दुनिया की चीजों को हासिल करना चाहते हैं। यूरोप की सारी कौमें आज इसी रास्ते पर चल रही हैं। रूस जर्मनी का दुश्मन है। अंग्रेज़ जापान के दुश्मन हैं। यह सब ऊपर की बातें हैं। अंग्रेज, रूस, जर्मनी, जापान और अमरीका यह सब इस निगाह से एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। पाँचों ही खुदा को भूल रहे हैं। पाँचों ही दीन को फ़जूल और ग़लत समझते हैं। वे एक दूसरे को मिटा डालना चाहते हैं। मिटे या न मिटे यह दूसरी चीज है, लेकिन इस लिहाज से उनमें कोई फ़र्क नहीं है। सारा का सारा यूरोप माद्दा परस्ती की तरफ़ जा रहा है। उन्होंने बिजली, पैसा और बाहरी ठाठ बाट को ही अपना ख़ुदा मान रखा है। हवाई जहाजों को ही खुदा समझ रखा है। हवाई जहाजों की ताक़त के मुक़ाबले में उन्होंने इनसानियत और न्याय अन्याय को पागलों की बड़ समझ रखा है। एक तरफ़ तो ऐसे लोग हैं, और दूसरी तरफ़ थोड़े से ऐसे भी आदमी दुनिया में हैं जो बिना अल्लाह या ईश्वर के, बिना धर्म और इन्साफ़ को लिए एक क़दम भी नहीं

चलना चाहते । कुछ लोग इस खयाल के भी हैं । इस तरह के लोगों से यूरोप के मुल्क भी खाली नहीं हैं । इंग्लैण्ड में भी इस खयाल के लोग आपको मिलेंगे । रूस में और अमरीका में भी मिलेंगे । लेकिन भाइयों ! इस वक्त इस खयाल के लोगों का वहाँ बहुमत नहीं है । वे आज वहाँ कसरत राय में नहीं हैं । थोड़े से आदमी यूरोप के मुल्कों में मौजूद हैं जो जंग के खिलाफ हैं । वह आजकल ज्यादातर जेलखानों के अन्दर पड़े सड़ रहे हैं, या कम से कम उनकी कौम के लोग उनकी बात अनसुनी कर रहे हैं । आजकल वह लोग 'होपलेस माइनोरिटी' में हैं ।

यूरोप के देशों को छोड़ कर दूसरे देश ऐसे भी हैं जिनकी करोड़ों की आबादी है, जो कहने को तो करीब करीब सब धर्म मजहब, अल्लाह और ईश्वर का नाम लेते हैं । इन देशों में हमारा भी मुल्क शामिल है । हिन्दुस्तान, चीन, ईरान, मिस्र और मेसोपोटामिया तक, यह खित्ता का खित्ता ऐसा है जहाँ थोड़ा बहुत धर्म मौजूद है । और जो धर्म और ईश्वर को छोड़ कर चलना नहीं चाहता वे मजहब को ठीक ठीक समझते हैं या नहीं वह चीज दूसरी है, लेकिन यह लोग मजहब का नाम जरूर लेते हैं । इस टुकड़े के अन्दर थोड़े बहुत लोग ऐसे जरूर मिलेंगे जो धर्म को जीवित रखना चाहते हैं । धर्म को छोड़ कर चलने का जो नतीजा है वह तो आपको साफ दिखाई दे रहा है । आज करीब करीब सारी दुनिया एक जबरदस्त भट्टी के अन्दर पड़ी हुई है । इस भट्टी से कौन बचेगा और कौन नहीं, किसकी कल क्या शक्ल होगी, दुनिया का नक़शा कल क्या होगा, यह सब तो समय ही बतावेगा । लेकिन इसमें कोई शक नहीं की दुनिया बदल गई है और बदल रही है । इसमें भी शक नहीं कि वह रास्ता जिस पर यूरोप चला इखलाक़, सदाचार और

सबके भले की निगाह से ग़लत रास्ता है, बरबादी का रास्ता है। ईश्वर को छोड़कर चलने का रास्ता ही बरबादी का रास्ता है। यूरोप ने पिछले डेढ़ दो सौ बरस से इस रास्ते पर चलने की कोशिश की है। इससे थोड़े दिनों तो चमक दमक, शान दिखाई दी। लेकिन क़रीब क़रीब एक सदी के अन्दर ही यूरोप की बड़ी सलतनतें ख़ुदकुशी करती दिखाई दे रही हैं। अंग्रेज़ों की बाज़ाब्ता हुकूमत इस मुल्क में क़ायम हुए अभी १०० बरस नहीं गुज़रे। सन् १८५७ से चार दिन पहले तक अंग्रेज़ गवर्नर जनरल की सरकारी मुहर में "फ़िदविए ख़ास बादशाहे दिल्ली" यह शब्द खुदे रहते थे। कम से कम नाम के लिए हिन्दुस्तान की सलतनत उस वक़्त तक दिल्ली के बादशाह के हाथों में थी। और कलकत्ते का अंग्रेज़ गवर्नर जनरल अपने को दिल्ली के बादशाह का वफ़ादार नौकर कहता था। क़ानूनी निगह से अंग्रेज़ क़ौम की सलतनत हिन्दुस्तान के अन्दर १८५६ के बाद से क़ायम हुई। इस तरह हमारे देश में अंग्रेज़ों की हुकूमत को क़ायम हुए अभी १०० बरस भी नहीं गुज़रे। अंग्रेज़ों ने जिस ताक़त के हाथों से राज छीना, अब ज़रा उसकी भी हालत देखिए। १५० बरस तो मुग़ल सलतनत के पूरी शान से गुज़रे वह वक़्त उनका बड़ा शानदार वक़्त था। उसके बाद गिरते गिरते भी मुग़लिया सलतनत को १५० बरस लग गए। ३५० बरस तक मुग़लों की इस मुल्क में हुकूमत रही। उसमें कम से कम २०० बरस का ज़माना देश भर में बड़ा ही ख़ुशहाली का ज़माना था। औरङ्गज़ेब का ज़माना भी इसी ज़माने में शामिल था। औरङ्गज़ेब के राज में और कितनी भी बुराइयाँ रही हों यूरोप के सारे तवारीख़ लिखने वाले इस बात को मानते हैं, इतिहास की सारी किताबें इस बात को तस्लीम करती हैं कि हिन्दुस्तान के अन्दर जो ख़ुशहाली और समृद्धि औरङ्गज़ेब के

ज़माने में दिखाई देती थी, वह उसके बाद फिर कभी दिखाई नहीं दी और उससे पहले भी दूर तक नज़र नहीं आती। दुनिया भर के देशों से हिन्दुस्तान की तिजारत उस समय खूब बढ़ी हुई थी। यहाँ का बना हुआ माल बाहर जाता था और दुनिया भर का पैसा ढुल ढुल कर यहाँ आता था। उस ज़माने में सचमुच इस देश में दूध और घी की नदियाँ बहती थी। उससे पहले वैसी या उससे बढ़कर समृद्धि देखने के लिए हमें सम्राट कनिष्क और समुद्रगुप्त, अशोक और चन्द्रगुप्त के समय तक जाना पड़ता है, और मुग़लिया सलतनत के मिटने के बाद से आज तक तो सिवाय दुष्काल, महामारी, भूख और बीमारी के दिन दिन बढ़ते जाने के कुछ दिखाई ही नहीं देता। आजकल के शासकों को अभी १०० वर्ष भी नहीं हुए और मालूम हो रहा कि थोड़े से दिनों का सवाल और है; सुबह या शाम, कल या परसों। धक्का नज़र आ रहा है और असार भी दिखाई दे रहे हैं। यह दिखाई सिर्फ इसलिए दे रहे हैं कि यूरोप की क़ौमों ने अल्लाह और इन्साफ़ को ताक़ पर रखने की कोशिश की। मुसलमान बादशाहों को थोड़ा या बहुत अल्लाह का डर था। वह अपनी रिआया के भले बुरे का कुछ न कुछ ख्याल करते थे। बदकिस्मती से वह डर यूरोप वालों के दिलों में नहीं है।

शाहजहाँ के वक्त की ही एक मिसाल लीजिए। बिहार के अन्दर बाढ़ आई। बाढ़ पीछे हटी। एक किसान की बहुत सी ज़मीन आगे को बढ़ गई। गङ्गा बहुत सा मैदान उसकी ज़मीन के पास का छोड़ गई। जो ज़मीन २-४-१० बीघा थी वह गङ्गा के हट जाने से ३०-४० बीघा हो गई। सरकारी अफ़सरों ने जब यह देखा तो उतना ही लगान भी उसके ऊपर बढ़ा दिया। लगान बढ़ कर वसूल भी हुआ। खज़ाने में दाखिल कर दिया

गया। शाहजहाँ कभी कभी जाकर माल के महकमे के काग़ज़ात देखा करते थे। बिहार के रजिस्टरों के वर्क़े पलटते वक्त उस किसान की मालगुज़ारी भी देखी जो पिछले साल में दूगनी तिगुनी हो गई थी। फौरन वहाँ के अफसरों से जवाब तलब हुआ कि यह लगान क्यों बढ़ाया गया ? अफसरों ने जवाब दिया कि गङ्गा का पानी हट जाने की वजह से इस किसान की ज़मीन बढ़ गई, उतना ही लगान ज्यादा कर दिया गया है। शाहजहाँ ने जवाब में लिखा कि ज़मीन गङ्गा के हट जाने को वजह से किसान को मिली है, यह उसे अल्लाह की देन है। अल्लाह की देन पर नया टैक्स लगाना जुल्म है। इसी क़ुसूर पर शाहजहाँ ने वहाँ के कई अफ़सरों को बरख़ास्त कर दिया, और आयन्दा के लिए सारी हुकूमत में एलान कर दिया कि जो ज़मीन नदी के हट जाने की वजह से किसी किसान को ज़मीन में बढ़ जावे वह अल्लाह की देन समझ कर उस पर कोई नया टैक्स न लिया जावे। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि शाहजहाँ के अन्दर कोई नुक़्स नहीं था। या मुग़लिया सलतनत में कोई कमी नहीं थी। कमी न होती तो मुग़लिया सलतनत जा ही नहीं सकती थी। दोष सभी के अन्दर होते हैं। मेरा मतलब सिर्फ यह है कि मुसलमानी राज के अंदर अल्लाह था। वे ईश्वर को मानते थे। वे धर्म, दीन, न्याय का पालन भी करना चाहते थे। आज मैं सिर्फ अंग्रेजों को ही नहीं कह रहा हूँ। आजकल दुनिया में जो कौम भी बढ़ रही है उसमें ईश्वर अल्लाह, दीन और ईमान को मिटा दिया गया है। आज इन सलतनतों के मिटने की खास वजह भी यही है। उनके न मानने से ईश्वर अल्लाह मिट नहीं सकता। लेकिन गलत राह पर चलने का नतीजा हमें भुगतना पड़ेगा।

अब मैं अपने मुल्क के और ख़ास कर मजदूर भाइयों

तुम्हारे बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। मैंने अभी कहा था कि हमारे मुल्क में ईश्वर अल्लाह को मानने वाले हैं। लेकिन ज़रा गौर से देखने की चीज़ है। अगर सचमुच हमारे मुल्क में अल्लाह को मानने वाले होते तो हमारी हालत उनसे ज़रूर अच्छी होती। यह भी देखने की चीज़ है कि एक तरफ यूरोप वाले आपस में लड़ते जा रहे हैं और दूसरी तरफ़ हम चालीस करोड़ इनसान के बच्चे हाथ पर हाथ रख कर बैठे हुए हैं। जब दुनिया के अंदर दो दो चार चार करोड़ की आबादी वाली क़ौमें खुद अपनी अपनी क़िस्मतों का फ़ैसला ही नहीं बल्कि सारी दुनिया की किस्मत का फैसला करना चाहती हैं हम ४० करोड़ महज़ अपनी गुलामी का रोना रो रहे हैं। आज यह ईश्वर और मज़हब की दुहाई देने वाले भूखों मर रहे हैं।

अगर हम ध्यान से देखें तो हमें इसकी वजह भी मालूम पड़ेगी। आज के सियासी काम करने वाले इस बात की कद्र करें या न करें मुझे इस बात का विश्वास है कि अगर दुनिया को कायम रहना है तो वह दीन और धर्म के सहारे ही रह सकती है। मुझे इस बात में इतना भी शुबहा नहीं जितना यह कहने में कि कल सूरज निकलेगा। दुनिया को इस चीज़ का यक़ीन करना होगा कि 'अल्लाह है, ईश्वर है! इस दुनिया को देखने वाला और कर्मों का फल यानी सजा और सज़ा को देने वाला कोई है! आज लोग इस तरफ से आँखें बन्द किये हुए है। लेकिन अल्लाह हमारी तरफ से आँखें बन्द नहीं कर सकता। आज धर्म मजहब की दुहाई देते हुए भी हमारी हालत इतनी गिरी हुई क्यों है? सच यह कि ईश्वर अल्लाह को मानते हुए भी हम उसको नहीं मान रहे हैं, हम धर्म का नाम लेते हुए भी धर्म से विमुख हैं! हमारा धर्म, हिन्दू मुसलमान या जैन—हमारा सब का धर्म आज खास चीजों या रस्मों के अन्दर बन्द

रह गया है। हम सभी सच्चे धर्म से विचलित हो गये हैं। हमने धर्म को खींच कर नीचे गिरा दिया है। उसे रसोई, चूल्हे वालों की खास काट और लिबास की चीज बना रखा है। मजहब को हमने गिरोहबन्दी और खुदी, अहंकार की चक्की में पीस डाला है। किसी त्योहार के दिन पंडित जी को बुला कर संस्कृत के मन्त्रों से पूजा करा लेना, पूजा भी उस भाषा में जिसको हम समझते नहीं हैं! आम मुसलमानों का मजहब भी ज्यादा से ज्यादा यही रह गया कि मौलवी साहब ने किसी तरह डाँट डपट कर, पाँच बार नहीं तो कम, अरबी में नमाज पढ़वा ली, रोजे रख लिये और मजहब पूरा हो गया। सच यह है कि हमारा सब का मजहब सिर्फ कुछ ऊपरी रस्मों के अन्दर रह गया है। हमारा मजहब कर्म-काण्ड और शरह मिनहाज के अन्दर रह गया है। धर्म मजहब का हृदय की शुद्धता या दिल की सफाई से कोई वास्ता नहीं रहा। जैन भाई बिलकुल निरामिष भोजी हैं। मांस खाने के वह पूरे दुश्मन हैं। मांस देख कर ही छी भी करने लगते हैं। दिया जलने के बाद खाना चाहिये या नहीं इन सब रूढ़ियों का भी पालन करते हैं। लेकिन उनका मजहब भी इन दस पाँच रूढ़ियों में ही रह गया है। जब किसी गरीब मजदूर का जिसे सेठ जी का कर्जा देना हो बेटा बीमार हो जाता है और उस मजदूर का दूसरा बेटा उनसे जाकर कहता है कि सेठ जी मेरा छोटा भाई बीमार है उसके लिए दवा की जरूरत है घर में और पैसा नहीं है मेहरबानी करके इस वार की किस्त मुलतवी कर दीजिये तो सेठ जी किस्त मुलतवी करने के लिये भी तैयार नहीं होते, माफ कर देना तो दूर की बात है। मैं आपको यह बात तजुर्बे से कह रहा हूँ।

सर छोटूराम का नाम तो आप लोगों ने सुना होगा। पंजाब के सर छोटूराम से पिछली दफा जेल जाने से पहले मुझे दो

सवा दो घण्टे बातचीत करने का मौका मिला। वह पंजाब के बनियों के जानी दुश्मन हैं। बनियों और व्यापारियों के लिये उनके दिल में कड़ुवापन भरा है। जब मैंने इसका कारण सर छोटूराम से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि—"मैं जब १२-१४ साल की उम्र का था तो बहुत गरीब घर का लड़का था। मेरे पिता गरीब थे। मेरा छोटा भाई बीमार पड़ा। उस दिन उसे बहुत कष्ट था। ठीक दवा देने की हमारी ताकत नहीं थी, हमारे पास पैसा बहुत कम था। पिता जी की राय थी कि महाजन की किस्त पूरी हो रही है, महाजन को वह रुपया जाना ही चाहिए, महाजन छोड़ दे तो दवा में लगा देना। मैं रुपया लेकर महाजन के घर गया। गरमियों के दिन थे। सेठ जी से मैंने कहा कि मेरा छोटा भाई बीमार है। उसकी दवा दारू के लिए और कुछ नहीं है। सेठ जी ने रुपया ले लिया और कहा कि अच्छा ठीक है पंखा खींचो। मैं बाहर इस आशा में पंखा खींचता रहा कि भाई बीमार है उसके लिए कुछ रुपया मिल जावेगा। साहूकार कई घण्टे बाद सोकर उठे—पूछा। तुम क्यों बैठे हो। मैंने फिर वही कहा। झिड़क कर बोले— भाई बीमार है तो मैं क्या करूँ जा किस्त मुलतवी नहीं हो सकती। मुझे आज तक वह नजारा याद है। अब जब तक इन साहूकारों को मिटा नहीं लूँगा चैन नहीं लूँगा।" देश के हिन्दू और जैन धनियों! अपने गिरेबान में मुँह डाल कर देखो यह बात कितनी सच है।

जब कभी किसी मामूली मुसलमान के पास कोई मौलवी साहब आते हैं तो वह क्या सवाल करते हैं? वह यही पूछते हैं कि नमाज़ पाँच वक्त पढ़ते हो या नहीं? देखते हैं दाढ़ी है या नहीं, पूछते हैं रोजे रखते हो या नहीं? बच्चों का खतना होता है या नहीं? लेकिन क्या कोई मौलवी यह भी पूछता है कि जिस वक्त खाना खाने बैठते हो तो पड़ोसी के साथ बाँट कर

खाते हो या नहीं ? वह भी पूछता है कि दूसरों के साथ ईमान-दारी का बरताव करते हो या नहीं ? दिन में कभी झूठ तो नहीं बोलते ? कलाम मजीद की एक आयत है—"लोग यह न समझें कि वे यह कहने से बच जाँयगे कि हम ईमान लाये थे। महज़ ईमान लाने से कोई बच नहीं सकता। तुम्हारे एक एक काम के लिये तुम से जवाब तलब किया जावेगा।" दोस्तों ! सच बात यह है कि हमारा मजहब सिर्फ दिखावे का मज़हब रह गया है।

मैं चाहता हूँ कि हम सब सच्चे धर्म और सच्चे ईमान पर आएँ। मुझे यकीन है कि दुनिया बिना मज़हब के जी नहीं सकती। बिना अल्लाह के जिन्दा नहीं रह सकती। लेकिन मज़हब दिल का मज़हब होना चाहिये। मज़हब सच्चाई और ईमानदारी का मजहब होना चाहिये। केवल कर्मकांड और शरअ मिनहाज का नाम मजहब नहीं है। चोटी दाढ़ी और खतने में मजहब नहीं है। उस पाक परवरदिगार के यहाँ यह चीजें नहीं देखी जावेंगी। वहाँ यही देखा जावेगा कि तुम अपने पड़ोसी के साथ कैसा बरताव करते थे। आज हमारा धर्म इस चीज में है कि एक तरफ रामलीला का जुलूस निकल रहा है और दूसरी तरफ ताजिया निकल रहा है, अब न जुलूस पीछे हटेगा और न ताजिया नीचे झुकेगा, चाहे दोनों तरफ लाशें गिर जावें ! धर्म आज इस चीज में रह गया है कि कौन किसे झुका ले !

मेरी पैदाइश जिला मुजफ्फर नगर की है। एक बार मैं वहाँ एक कानफ़रेन्स में प्रिसाइड करने के लिए बुलाया गया। उसके कुछ दिन पहले वहाँ हिन्दू मुसलमानों में झगड़ा हो चुका था। वजह यह थी। एक छोटा सा मंदिर था। मंदिर के पास

से एक गली जाती थी। उस मंदिर में एक नीम का दरख्त था। वह दरख्त पवित्र समझा जाता था। वहीं उस गली से ताज़िए निकलते थे। ताज़िया कुछ ऊँचा था। शायद जान कर बनाया गया हो। ताज़िया नीम की एक शाख से टकराता था। मुसलमानों की माँग थी कि नीम की शाख काट दी जावे, ताज़िया झुक नहीं सकता। हिन्दुओं की माँग थी कि या तो ताज़िया दूसरी गली से ले जाया जावे या ज़मीन खोद कर निकाल लिया जावे. नीम पवित्र है। मन्दिर की, उसकी टहनी कट नहीं सकती। नतीजा यह हुआ कि रायट हो गया। जिसमें एक १२, १४ बरस की लड़की मर गई। मुझसे लोगों ने कहा कि उस मामले पर भी कुछ कहूँ। मुझे सूझ नहीं पड़ता था कि मैं क्या कहूँ। किसको ग़लत कहूँ, किसको ठीक। आखीर एक दिन बोलने के लिए खड़ा हुआ। आवाज़ आई उस चीज पर भी। मुझे एक बात सूझी, वही उस वक्त कही थी, वही आज कह रहा हूँ। लानत है उस दरख्त पर, वह टहनी क्या दरख्त जड़ से कट जावे जो भाई भाई में झगड़ा करादे! और जो एक १३ साल के बच्चे का खून करादे। ऐसे ही वह ताजिया नहीं, नापाक चीज है जो भाई भाई में खून करादे। मुसलमानों और हिन्दुओ! मैं क्या करूँ! मैंने यह तमाशा खूब देखा है। बहुत दिनों से देखा है। बहकाने वाले जोश दिलाने वाले बहुत मिलेंगे। लेकिन अल्लाह से डरने वाले बहुत कम मिलेंगे। यहाँ बहुत से मुसलमान पढ़े लिखे मेरे दायें बाँये बैठे हुए हैं। जनाब आली! यह ताज़िया बनाने का रिवाज हिन्दुस्तान का ही रिवाज है। हिन्दुस्तान के बाहर किसी भी मुसलमानी मुल्क में यह रिवाज नहीं है। किसी भी मौलवी से पूछो कि ताजिया—दारी बिदअत है या नहीं। मेरी बात कड़वी ही सही। तारीफ़ तो यह है कि ताजिया मुसलमानों का हो और कन्धा लगा हो हिन्दुओं का बताशे फेंके

हिन्दू और मुसलमानों ! जब इस दृष्टि से इस ख्याल से तुम इस चीज को देखोगे तो तुम्हें एक अजीब चीज दिखाई देगी। तब हिन्दू धर्म में इस्लाम धर्म और इस्लाम धर्म में हिन्दू धर्म नजर आवेगा। किसी का दीन किसी का मजहब एक दूसरे के साथ बेईमानी करना नहीं सिखाता, झूठ बोलना नहीं सिखाता, वायदा तोड़ना नहीं सिखाता। इस दृष्टि से तुम्हें किसी धर्म के अन्दर कोई फर्क दिखाई नहीं देगा। आज हमारे मुल्क की जो हालत गिरी हुई है उसकी यह वजह नहीं है कि हम सब अधर्मी हो गए हैं, बल्कि यह है कि हमने धर्म को दीन को गलत समझ रखा है। भाइयो ! जो धर्म हमारे मिलाने की चीज होना चाहिये था वह आज हमें फोड़ने की चीज हो रहा है।

हर धर्म मजहब के अन्दर दो चीजें होती हैं। एक तो धर्म की रूह यानी आत्मा, दूसरा धर्म का शरीर यानी रीत रिवाज, शरअ मिनहाज। शरीर बदलता रहता है, आत्मा अमर है। शरीर देर तक कायम नहीं रह सकता। इन मानी में सच्चाई और ईमानदारी के साथ आप अपने धर्म का पालन करें, एक दूसरे के साथ प्रेम करें। एक दूसरे के साथ मुहब्बत और एक दूसरे की खिदमत करें। जब आपके बराबर की कोठरी में यह मालूम पड़े कि कोई बीमार पड़ा है तो बिना इस लिहाज के कि वह हिंदू है या मुसलमान, ब्राह्मण है या चमार, जाति पाति, छुआ-छूत को छोड़ कर, सब एक अल्लाह के बंदे हैं, यह सोच कर आप उसकी सेवा करें। आज अल्लाह के बंदों को अलग अलग टुकड़ों में हमारी झूठी जाति पाति और छुआछूत ने बांट रखा है। हम इन्हीं रीति रीवाजों और कर्मकांडों में फँसे हुए हैं। इन्हें छोड़ो, सचाई और ईमानदारी व मुहब्बत के साथ एक दूसरे की खिदमत करो। दूसरों की सेवा करना ही अपना दीन और धर्म समझो।

हिंदू और मुसलमानों! यही धर्म है और यही दीन है। यही सच्चा हिंदू धर्म है और यही सच्चा इसलाम, इस धर्म को अपने अन्दर जगह दो और झूठे झगड़ों और नफ़रतों को अपने दिल के सिंहासन से हटा दो। यह छोटी सी चीज तुम्हें और हमें सब को सब मुसीबतों से बचा ले जायगी और तरक्की, खुशहाली और आजादी के मार्ग पर ले जाकर खड़ा कर देगी। कोई दीन और मजहब नहीं जो सच्चाई, इखलाक और मुहब्बत के साथ बरताव करने से रोकता हो। मुझे याद है जब कि हिंदू और मुसलमान मेल मिलाप से रहते थे। एक दूसरे को सगे भाई बहन की तरह समझते थे। हमारे दिलों में एक दूसरे के लिए विश्वास था, एक दूसरे पर एतबार था, मुरार के किसी हिंदू मजदूर की लड़की अगर आगरे ब्याही है, और पास का मुसलमान मजदूर आगरे जा रहा है तो लड़की की माँ उस मजदूर से कहे कि बेटा तू आगरे जा रहा है अपनी बहन को अपने साथ विदा कराते लाना। यह मुहब्बत है। ऐसा एतबार पैदा करो। यह जो मैंने कहा है वह क़िस्सा ही नहीं है मेरा जाती तजुर्बा है। वह दिन मुझे आज का सा दिन दिखाई पड़ता है। मेरी बुआ दिल्ली में ब्याही थीं। मेरी दादी मुजफ्फ़रनगर जिले में रहती थीं। मकान के बराबर में एक खाँ साहब का मकान था। मैं उन दिनों एक छोटा बच्चा था। मेरी बुआ की हाल में शादी हुई थी। खाँ साहब का जवान लड़का एक बार जब दिल्ली जा रहा था, उसने मेरी दादी से आकर कहा कि "जी जी, मैं दिल्ली जा रहा हूँ कुछ काम हो तो बता दो।" मेरी दादी ने कहा "बेटा दिल्ली जा रहे हो, वहाँ से अपनी बहन को विदा करा के लिवाते आना।" मैंने वह दिन देखा है। दोस्तों! वह दिन फिर वापिस आना चाहिये, और आयगा, महज हम एक चीज को हासिल करें और वह है एक दूसरे का

एतबार, एक दूसरे की बहन और बेटी को अपनी बहन और बेटी समझें। फूट जावें वह आँखें जो सेवा के लिये निकलें और हिंदू और मुसलमान दुखियों के बीच तमीज़ करें! कट जावें वह पैर जो मुसीबत जदों की मदद के लिये बढ़ें हों और हिंदू और मुसलमान मुसीबत जदों में भेद करें! यकीन करो यही धर्म है। यही सलामती और निजात का रास्ता है—इसके खिलाफ सारे रास्ते खतरनाक रास्ते हैं।

रामरूप साहब तिवारी:—भाइयो! अब मैं आपका ज्यादा समय नहीं लूँगा। आप लोगों ने शान्ति के साथ जो सुंदर भाषण सुना उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। पण्डित जी ने आपके शहर में ४ भाषण दिये और उनका यह भाषण आखिरी है। आपने जिस प्रेम से और जैसे अनमोल भाषण दिये हैं उसका बयान करना मेरे लिये मुमकिन नहीं है। पण्डित जी जिस तकलीफ़ को उठाकर इलाहाबाद से यहाँ तक आये और यहाँ भी उन्होंने इतना परिश्रम उठाया उसके प्रति रूप में कोई धन्यवाद अदा नहीं कर सकता। फिर भी आप लोगों की तरफ़ से इस आखिरी जलसे में उनको धन्यवाद देता हूँ, और उम्मेद करता हूँ कि पंडितजी कम से कम साल में एक दफा तो जरूर यहाँ आकर अपने अमूल्य भाषण देंगे। पंडितजी ने हिन्दू, मुस्लिम एकता को बता कर एक कीमती चीज जो मेरी समझ में आई है, यह भी बता दी है कि ईश्वर और खुदा को मिलने का सच्चा रास्ता कौन सा है और इसी चीज से हमारे हृदय में काफी राष्ट्रीयता भी पैदा हो सकेगी। मेरे पास ऐसे शब्द नहीं हैं जिनसे मैं पंडित जी को धन्यवाद दे सकूं। बस इतना कह कर आज की कार्रवाई को खत्म करता हूँ।